"पुराने की लीक छोड़ो । लीक पर सिर्फ मुर्दे ही चलते हैं । जीवन सदा नये की खोज है । जो निरन्तर नया होने की क्षमता रखता है, वही ठीक अर्थों में जीवित है । पुराने के प्रति प्रतिपल मर जाओ ताकि तुम सदा नये हो सको । जीवन क्रांति का मूल सूत्र यही है ।"

## आचार्य श्री रजनीश की रेडियो–वार्त्ता

दिनांक २१ जुलाई सोमवार को रात्रि ८ बजे से जबलपुर, भोपाल, इन्दौर, ग्वालियर, रायपुर रेडियो स्टेशनों से आचार्य श्री की "कुछ और चाहिए ( आध्यात्मिक विश्वास)" विषय पर रेडियोवार्त्ता प्रसारित होगी।


# युक्रांद

वर्ष १ : अंक ३

१६ जुलाई ६९

★

मूल्य : एक प्रति

६० न० पै०

★

वार्षिक १२) रु०

★

मानसेवी संपादक :

अजितकुमार

★

सह-संपादक :

आलोक कुमार पांडे

( आचार्य श्री रजनीश के विचारों का देश का प्रथम पाक्षिक पत्र )


## दो शब्द

जीवन और जगत की सत्ता व्यक्ति के जीवन को अपरिसीम दीप्ति और शांति से भर सकती है। पूज्य आचार्य श्री की वाणी अंतः सत्ता और बाह्य सत्ता से आलोकित है। उसमें एक ओर अपूर्व शांति का स्रोत है तो दूसरी ओर अपूर्व क्रांति का आवाहन भी। व्यक्ति और समाज के जीवन में शांति और क्रांति का यह अपूर्व संगम हो, इसी के लिए सदैव आप तक आचार्य श्री की वाणी को हम पहुंचाते रहेंगे।

—सम्पादक

# अमृत कण:

मैं आप सबको जीवन के संबंध में सोच विचार में पड़े देखकर बहुत हैरान होता हूं। जीवन सोच विचार से नहीं, वरन् उसकी समग्रता में उसे जीने से ही जाना जाता है। सत्य से परिचित होने का और कोई मार्ग ही नहीं है। जागो और जियो। जागो और चलो। सत्य कोई मृत वस्तु नहीं है, कि उसे बैठे बिठाये ही पाया जा सके। वह तो अत्यंत जीवन्त प्रवाह है। जीवन के साथ ही साथ जो सब भांति मुक्त और निर्बन्ध हो बहता है, वही उसे पाता है और बहुत दूर के सोच विचार में अक्सर ही निकट को खो दिया जाता है। जबकि निकट ही सत्य है और निकट में ही वह भी छिपा है जो कि दूर है। क्या दूर को पाने के लिये सर्वप्रथम निकट को ही पाना अनिवार्य नहीं है? क्या समस्त भविष्य वर्तमान के क्षण में ही उपस्थित नहीं है? क्या एक छोटे से कदम में ही बड़ी से बड़ी मंजिल का भी आवास नहीं होता है?

आचार्य श्री रजनीश

## ज्वलंत राष्ट्रीय समस्या और समाधान

# नई और पुरानी पीढ़ी : संघर्ष और दिशा

पिछले अंक में आप पढ़ चुके हैं :

★ नई और पुरानी पीढ़ी का संघर्ष जीवन की अनि-वार्यता से पैदा हुआ है, उसे रोका नहीं जा सकता ।उसे समझपूर्वक पार करना होगा ।

★ नई और पुरानी पीढ़ी के बीच जो संघर्ष है, वह परिवर्त्तन जैसा संघर्ष नहीं है, वह क्रांति जैसा संघर्ष है । इस क्रांति में पुरानी पीढ़ी बाधा डालेगी और जिंदगी का बहाव परिवर्त्तन चाहेगा, क्रांति चाहेगा क्योंकि उसी के माध्यम से गति हो सकती है, अन्यथा गति नहीं हो सकती ।

★ तीसरी बात : संघर्ष का कारण पुरानी पीढ़ी है, नई पीढ़ी नहीं । नई पीढ़ी सिर्फ़ जीवन की धारा है—और पुरानी पीढ़ी इसमें रुकावट बनती है, तो संघर्ष पैदा होता है । लेकिन क्रांति कभी रोकी नहीं जा सकती; बाधा डालने से अस्त-व्यस्त होती है, अराजक होती है, हिंसक होती है और लंबा जाती है, लेकिन रुकती नहीं ।

★ संघर्ष के इन तीन कारणों को स्पष्ट करते हुए आगे अपनी चर्चा में. आचार्य श्री ने कहा है : नई और पुरानी पीढ़ी के बीच जो संघर्ष का पहला बिंदु है वह दो तरह की भाषा है । पुरानी पीढ़ी की भाषा नई पीढ़ी नहीं समझ रही । नई पीढ़ी की भाषा पुरानी पीढ़ी नहीं समझ रही । पुरानी पीढ़ी अनुभव से बोलती है और नई पीढ़ी तर्क से बोलती है और दोनों की भाषायें अलग हैं और दोनों के बीच संवाद बंद हो गया है ।

और अब आगे पढ़िये आचार्य श्री की पैनी और सृजनात्मक जीवन दृष्टि जो उपरोक्त सामयिक समस्या पर मौलिक हल देती है :—

नई और पुरानी पीढ़ी के बीच संघर्ष का एक मुद्दा ये है कि दोनों के बीच बातचीत बंद हो गई है । दोनों के बीच झगड़ा तो होता है, लेकिन झगड़ा कोई बातचीत नहीं है । जहां तक मैं देखता हूं, बाप और बेटे के बीच

कोई बातचीत नहीं होती है, बेटा बाप के पास तभी जाता है जब उसे पैसे चाहिये होते हैं और बाप बेटे के पास तभी जाता है जब उसे कोई उपदेश देना होता है, इसके अतिरिक्त कोई बातचीत नहीं होती। इसके अतिरिक्त बातचीत बंद हो गई है। गुरू और शिष्य के बीच सारी बातचीत बंद हो गई है। आप कहेंगे गलत कहता हूं, दिन रात गुरू और शिष्य बातचीत कर रहे हैं। जरा भी बातचीत नहीं है। कोई संवाद नहीं है। गुरू पढ़ा रहा है, जो उसे पढ़ाना है, जो किताब में है जो तय किया गया है, वह पढ़ाता है। उसका काम एक मशीन का है, जो पढ़ा दे, और विद्यार्थियों का काम है कि उसे सुन लें। अगर इतना ही हो जाय कि गुरू बोलता रहे और लड़के सुन लें तो पर्याप्त शांति और अनुशासन चल रहा लेकिन बातचीत बंद हो गई है, लेनदेन बंद हो गया है, कोई रागात्मक संबंध समाप्त हो गया है और ध्यान रहे बातचीत वहाँ होती है जहाँ रागात्मक संबंध हों। वह संबंध टूट गया। वे संबंध बिल्कुल क्षीण हो गये हैं। इन संबंधों के क्षीण होने के कारण एक बहुत बड़ी खाई पैदा हो गई है। यह आपको पता न होगा कि भाषा से बड़ी और कोई खाई नहीं होती। अगर आप एक अजनबी आदमी के पास खड़े हो जायें जो आपकी भाषा नहीं जानता, तो आप दोनों पास पास खड़े हैं, लेकिन आप दोनों के बीच इतना फासला है जैसे कोई आदमी चाँद पर खड़ा हो और आप जमीन पर खड़े हों। भाषा जहाँ नहीं है समान, वहाँ जितनी बड़ी खाई पैदा होती है, उतनी बड़ी खाई और कहीं पैदा नहीं होती। आदमी और आदमी के बीच सारे संबंध भाषा के हैं और जहाँ भाषा न हो एकसी, वहाँ सारे संबंध विच्छिन्न हो जाते हैं। पुरानी पीढ़ी के पास जो भाषा थी वह धर्म के आधार पर बनी थी और नई पीढ़ी के पास जो भाषा है वह विज्ञान के आधार पर बनी है। और धर्म तथा विज्ञान के बीच जितनी खाई है, उतनी बड़ी खाई पुरानी पीढ़ी तथा नई पीढ़ी के बीच खड़ी हो गई है। धर्म और विज्ञान के बीच बहुत बड़ी खाई है : भाषा की, जिसको पूरा नहीं किया जा सकता या तो धर्म को विज्ञान होना पड़े तो खाई पूरी हो या विज्ञान को धर्म होना पड़े तो खाई पूरी हो। विज्ञान धार्मिक नहीं हो सकता, क्योंकि विज्ञान धार्मिक हो गया तो गया। धर्म वैज्ञानिक हो सकता है, लेकिन धर्म अगर वैज्ञानिक होता है तो पंडित, पुरोहित, साधु, गुरू गये। वह टिक नहीं सकते। लेकिन वह खाई बड़ी होती चली जाती है, उन दोनों के बीच कोई सेतु, कोई ब्रिज बनाने का रास्ता नहीं दिखाई देता है। उतनी ही बड़ी खाई हमें नई और पुरानी पीढ़ी के बीच देखनी चाहिये, क्योंकि नई पीढ़ी की जो भाषा निर्मित हो रही है, वह विज्ञान से आ रही है और पुरानी पीढ़ी के पास जो भाषा है वह धर्म से आ रही है। पुरानी पीढ़ी विश्वास की और श्रद्धा की भाषा बोलती है और नई पीढ़ी संदेह की और तर्क की भाषा बोलती है। अंग्रेजी और हिन्दी में इतना फासला नहीं है, चीनी और हिन्दी में इतना फासला नहीं है, जितना विज्ञान और धर्म की भाषा में फासला है। यह बात हमारी समझ में आ जाये तो हम इस संघर्ष की प्राथमिक भूमिका को ठीक से समझ ले सकते हैं। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। क्योंकि सारी दुनिया एक अर्थों में एक ही भाषा बोलती थी और वह भाषा बिलीफ, विश्वास की भाषा थी। यह जो सिखाया गया था हजारों साल से कि जोकहा जाये उस पर विश्वास करना चाहिये, सन्देह करने वाला व्यर्थ है। सन्देह करने वाला सन्देह करने के कारण गलत है। सन्देह इसलिये गलत था कि सिखाया गया था कि जो सन्देह करता है, वह भटक जाता है। लेकिन तीन सौ वर्षों में विज्ञान ने बताया कि जो सन्देह करता है वही पाता है। जो

**"पुरानी पीढ़ी के पास जो भाषा थी वह धर्म के आधार पर बनी थी और नई पीढ़ी के पास जो भाषा है, वह विज्ञान के आधार पर बनी है और धर्म तथा विज्ञान के बीच जितनी खाई है, उतनी बड़ी खाई पुरानी पीढ़ी तथा नई पीढ़ी के बीच खड़ी हो गई है।"**

संदेह नहीं करता वह भटक जाता है। विज्ञान का सारा विकास डाउट, सन्देह का विकास है और तीन सौ वर्षों में विज्ञान ने जो उपलब्धियाँ कीं, धर्म की तीस हजार वर्षों की उपलब्धियां भी उनके मुकाबले पीछे पड़ गईं, और यह साफ हो गया कि संदेह करने वाले लोग नहीं भटकते, विश्वास करने वाले लोग भटकते हैं। और अब बच्चों को जो शिक्षा दी जा रही है वह संदेह के आधार पर खड़ी विज्ञान की शिक्षा दी जा रही है। विज्ञान का प्राण संदेह है, अगर कोई आदमी संदेह नहीं कर सकता तो वह आदमी वैज्ञानिक नहीं है। अगर कोई आदमी पिछली उपलब्धियों पर संदेह नहीं करता तो आगे की उपलब्धियों का मार्ग नहीं। न्यूटन पर आइन्सटीन को संदेह करना चाहिये तो ही आइन्सटीन पैदा होगा, अगर आइन्स्टीन न्यूटन पर विश्वास करता है तो आइन्स्टीन कभी पैदा नहीं होगा। अगर तुम अपने गुरू पर विश्वास करते हो और रुक जाते हो तो विज्ञान ठहर गया तुम्हारे गुरू पर। और अगर उनके गुरू भी उनके गुरू पर विश्वास करते हैं तो फिर मौत आ गई। फिर आगे जाना नहीं हो सकता।

शिष्य को गुरू पर संदेह करना चाहिये तो विज्ञान आगे बढ़ेगा। लेकिन धर्म को जो भाषा थी वो कहती थी विश्वास करो, पीछे की तरफ, बेटा बाप पर विश्वास करे। उस बाप ने भी जब वह बेटा था अपने बाप पर विश्वास किया और जीवन को मंजिल पार की। इसलिये धर्म होता है अतीत—उन्मुख और विज्ञान होता है भविष्योन्मुख। संदेह ले जाता है भविष्य में और धर्म ले जाता है अतीत में। तो धर्म की जो भाषा है, वह प्राचीनतम है और विज्ञान की जो भाषा है वह नव्यतम है। और उन दोनों के बीच इतनी बड़ी खाई है, जितनी बड़ी खाई नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच है।

**"धर्म होता है अतीत-उन्मुख और विज्ञान होता है भविष्योन्मुख। संदेह ले जाता है भविष्य में और धर्म ले जाता है अतीत में। और धर्म और विज्ञान के बीच इतनी बड़ी खाई है, जितनी बड़ी खाई नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच है।"**

एक कहानी आपने जरूर सुनी होगी, लेकिन आधी सुनी होगी। क्योंकि धार्मिक लोगों ने उसका निर्माण किया था। उसमें आधी कहानी मैं और जोड़ देता हूं ताकि वो कहानी पूरी हो जाये। आपने सुना होगा कि एक सौदागर था, जो टोपियाँ बेचता था। सभी ने अपने बचपन में वो कहानी पढ़ी है। वो टोपियाँ बेचने के लिये बाजार जा रहा था, मेला जा रहा था। रास्ते में वह एक पेड़ के नीचे विश्राम करने को रुका। बंदर उतरे और उसकी टोपियाँ पहनकर झाड़ पर चढ़ गए।

जब उसकी नींद खुली तो देखा कि उसकी सारी टोपियाँ गायब थीं और बंदर टोपियाँ लगाये ऊपर शान से बैठे थे। अचानक उसे ख्याल आया कि बंदर नकलची होते हैं। उसने अपनी टोपी निकालकर फेंक दी, सारे बंदरों ने अपनी टोपियाँ उतारकर फेंक दीं। इतनी कहानी आपने पढ़ी होगी। आधी कहानी खाली रह गई है, वह अभी तक लिखी नहीं गई है, वह मैं आपको कह देता हूं। वह सौदागर मरा, उसका बेटा बड़ा हुआ। और उसने भी वही टोपियाँ बेचने का काम शुरू कर दिया जैसा कि पुरानी पीढ़ियाँ करती रही हैं, सभी समझदार बेटों को वही करना चाहिये जो बाप करते हों। उसने भी टोपियाँ बेचना शुरू कर दिया। वह उसी झाड़ के नीचे रुका, क्योंकि बेटों को उसी झाड़ के नीचे रुकना चाहिये जिस पर बाप रुकते हों। उसने उसी जगह पर टोपियाँ रखीं, जहाँ उसका बाप रखता था। बन्दरों के भी बाप मर चुके थे, और उनके बेटे झाड़ पर थे। वे बेटे भी अपने बाप के अनुकूल पेड़ से नीचे उतरे और टोपियाँ पहनकर ऊपर बैठ गये। सौदागर के बेटे की नींद खुली। उसके बाप ने बताया था कि बंदर नकलची होते हैं। उसने बताया था कि उसने अपनी टोपी फेक दी थी और बंदरों

ने भी अपनी टोपियाँ नीचे फेंक दी थीं। वो हँसा और उसने कहा : बंदरो तुम क्या मुझे धोखा दे पाओगे मैं उसी सौदागर का बेटा हूं, जो तुम्हारे बाप को धोखा दे गया है। उसने टोपी नीचे फेंकी—लेकिन आश्चर्य एक बंदर नीचे उतरा और उसकी टोपी उठाकर पेड़ पर चला गया। क्योंकि बन्दर अब तक तरकीब समझ चुके थे। ये आधी कहानी भी उसमें जोड़ लेना चाहिये।

लेकिन अब तक ऐसा नहीं हुआ था। अब तक पुराने पर विश्वास कारगर सिद्ध हुआ था। उसने हमेशा काम किया था। पहली दफा, विगत १०० वर्षों में पश्चिम में और हमारे मुल्क में इधर २० वर्षों में एक नई घटना घटी है, पुरानी तरकीबों ने काम करना बंद कर दिया है। पुरानी बातें, पुराने फार्मूले, पुराने सूत्र व्यर्थ हो गये हैं। और उन सबकी व्यर्थता के साथ एक खाई खड़ी हो गई है। इस खाई को समझ लेना जरूरी है। पुरानी पीढ़ी इस खाई को समझने को राजी नहीं है। वह कहती है कि जो था वह ठीक था। वापिस लौट आओ। लेकिन यह भ्रांत धारणा है। जीवन में कभी वापिस लौटना होता ही नहीं है। जीवन है सदा आगे। आगे जाना होता है, वापिस लौटना होता ही नहीं। नई पीढ़ियाँ वापिस नहीं लौटेंगी, ये तथ्य कितना भी दुखद मालूम पड़े इसे जितने जल्दी स्वीकार किया जाये, उतना ही सुखद हो सकता है। नई पीढ़ियाँ वापिस नहीं लौटेंगी। वापिस लौटना होता ही नहीं। दुनियाँ में कभी भी वापिस लौटना नहीं होता है, इतिहास का चक्र हमेशा आगे की ओर अनफोल्ड होता है, पीछे की तरफ लौटता नहीं। इतिहास में कोई रिवर्स गेयर नहीं है, पीछे ले जाना वाला कोई नहीं होता, होता ही नहीं। समय पीछे की ओर नहीं लौटता। जो क्षण बीत गया, बीत गया। न वो क्षण है, न हम उसमें कभी वापिस लौट सकते हैं। इसलिये पीछे की तरफ लौटाने वाली सारी तरकीबें वैसी ही व्यर्थ हैं, जैसे बूढ़े आदमी को बच्चा बनाने की कोशिश। बूढ़ा आदमी बच्चा नहीं बनाया जा सकता। और विज्ञान ने यह संभावना पैदा कर दी कि बूढ़े आदमी को फिर बच्चा बना दो तो ये बच्चा, बच्चों से बहुत भिन्न होगा। ये बच्चा, बच्चा कभी नहीं बनेगा। ये बूढ़ा बच्चा होगा। और बच्चे ही इतने खतरनाक हैं, बूढ़े बच्चे कितने खतरनाक होंगे इसका हिसाब लगाना कठिन है।

चीजें पीछे नहीं लौटती हैं, ना ही लौटाने की आकांक्षा हितकर है। लौटाने को, रोक लेने की, आकांक्षा से जिद्द पैदा होती है, जिद्द से संघर्ष पैदा होता है। सारी दुनिया में वृद्ध वर्ग रोकने की कोशिश कर रहा है कि चीजें वापिस लौट आयें। यह वैसे ही है, जैसे किसी माँ के पेट से बच्चा बाहर निकल गया हो और माँ सोचती हो कि बच्चा गर्भ में वापिस लौट आये। ये असंभव है। चीजें आगे की तरफ खुलती हैं और फैलती चली जाती हैं। क्योंकि बच्चा जैसे जैसे बड़ा होता चला जाता है माँ से दूर होता जाता है। यह तथ्य ध्यान रख लेने जैसा है। जब बच्चा माँ के पेट में होता है, तो माँ का हिस्सा होता है। वह उसका ही हिस्सा होता है। माँ हिलती है तो उसका बच्चा हिलता है। माँ स्वस्थ होती है तो उसका गर्भ स्वस्थ होता है, माँ बीमार पड़ती है तो उसका गर्भ बीमार पड़ता है। माँ और बच्चे में कोई फर्क नहीं है। वे जुड़े हैं, इकट्ठे हैं। फिर ९ महीने बच्चा बड़ा हो गया, उसे माँ के शरीर को छोड़ देना पड़ता है। उसकी नई यात्रा शुरू हुई। फिर बच्चा व्यक्ति बना। माँ से उसका जो संबंध था, जो उसे जोड़े था वह काट दिया गया। अब माँ इसे पालेगी, पोषेगी, लेकिन कितना ही पाले पोषे बच्चे और माँ के बीच का फासला बड़ा होता चला जायेगा। बच्चा जितना बड़ा होगा, माँ और बच्चे के बीच फासला होता चला जायेगा। बच्चा व्यक्ति बन गया। और व्यक्ति बनने के लिये माँ से मुक्त होना जरूरी है। क्योंकि व्यक्ति वही बन सकता है, जो जिस मात्रा में स्वतंत्र हो। बच्चा बड़ा होगा और माँ घबरायेगी। माँ कई बार चाहेगी कि बच्चा फिर छोटा हो जाये, क्योंकि बच्चा ऐसी बातें करना शुरू करेगा जो माँ की कल्पना से बाहर होंगी। क्योंकि बच्चे की अब अपनी कल्पना पैदा हो रही है। बच्चा ऐसी बातें करेगा, ऐसे काम करेगा जो माँ सोचेगी बच्चा कभी न करे। लेकिन बच्चे के साथ अब अपना व्यक्तित्व है। वह भूलें

भी करेगा, भटकेगा भी, दौड़ेगा, गिरेगा और बड़ा होता चला जायेगा। फिर जैसे जैसे बड़ा होता चला जायेगा, माँ और बच्चे के बीच की खाई बड़ी होती जायेगी। अब कोई उपाय नहीं है कि इस खाई को पूरा किया जा सके। या इस बच्चे को वापिस लौटाया जा सके। हाँ एक रास्ता है : बच्चा वापिस नहीं लौटाया जा सकता, माँ की तरफ, लेकिन माँ बच्चे की तरफ जा सकती है। इस बात को ठीक से समझ लेना जरूरी है।

नई पीढ़ियाँ पुरानी पीढ़ियों की तरफ वापिस नहीं जा सकती लेकिन पुरानी पीढ़ियाँ नई पीढ़ियों की तरफ समझपूर्वक निकट आ सकती हैं। बच्चा माँ की तरफ वापिस नहीं लौट सकता और अगर किसी तरकीब से बच्चे को माँ की तरफ वापिस लौटाने की चेष्टा की गई तो बच्चे का व्यक्तित्व कुन्ठित हो जायगा, विकसित नहीं हो सकेगा। इसलिये जो मातायें अपने बच्चों को बहुत बाहों में घेर कर रख लेती हैं, वे बच्चे की हत्या कर देती हैं। उन्हें पता नहीं कि वे बच्चे विकसित ही नहीं हो पाते, वे बच्चे खत्म हो जाते हैं। बच्चे के विकास के लिये जरूरी है कि माँ प्रेम दे, लेकिन उसे अपनी बाहों में बाँध न ले। बच्चे के विकास के लिये जरूरी है कि बच्चा अनजान और अपरिचित रास्तों पर जाये, जिनसे माँ परिचित नहीं है। इससे माँ के प्राण घबड़ायेंगे, डरेंगे, क्योंकि अनजान रास्तों पर भूल चूक हो सकती है। लेकिन अनजान रास्तों पर जाकर ही बच्चे की अपनी आत्मा पैदा होती है। तो माँ इतना ही कर सकती है कि वह अनजान रास्तों पर भी बच्चे के लिये छाया बने। लेकिन माँ अक्सर बच्चे को अनजान रास्तों पर जाने में बाधा बनती है, छाया नहीं बनती। अनजान रास्तों पर बच्चे के लिये सहयोगी नहीं बनती, विरोधी बनती है। और तब जिद्द पैदा होती है, संघर्ष शुरू होता है। आज तक दुनिया में, इस बीसवीं सदी के मध्य में आकर एक अद्भुत घटना घटी है, शायद सामाजिक अर्थों में नई पीढ़ी पहली दफा जवान हो रही है। अब तक नई पीढ़ी जवान नहीं थी। समाज के तल पर अब तक नई पीढ़ी बच्चा थी। वह चाइल्डहुड में थी, बचपन में थी। इसलिये बाप बूढ़ों की पीढ़ी जो कहती वह मानती थी, हाथ पकड़कर चलाती थी, वह चलती थी। जहाँ बैठने को कहती थी, बैठती थी। लेकिन इधर मध्य बीसवीं सदी में आकर ऐसा लगता है कि एक क्रांति घट गई है, सामाजिक तल पर नई पीढ़ी जवान हो गई है। और जवान पीढ़ी नये रास्तों पर जायेगी, भूलें करेगी, मानने से इन्कार करेगी, हाथ पकड़ के चलने से इन्कार करेगी। इस इंकार की हालत में अगर पुरानी पीढ़ियों ने कोशिश की कि जवान को बच्चा ही रहने दें तो संघर्ष पैदा होगा और संघर्ष खतरनाक हो सकता है। पीछे लौटना असंभव है। एक ही रास्ता है कि पुरानी पीढ़ी अपरिचित और नये रास्तों पर नई पीढ़ी की संगी साथी बने, सहयोगी बने, मत्र बने। बाधा न दें, रुकावट न दे, तो संघर्ष आज खतम हो सकता है। और वह बहुत सुखद होगा क्योंकि हम संघर्ष को पार कर लेंगे और नई पीढ़ी अनजान अपरिचित रास्तों पर भी पुरानी पीढ़ी का सहारा पाकर मजबूत हो सकेगी।

**"नई पीढ़ियाँ पुरानी पीढ़ियों की तरफ वापिस नहीं जा सकतीं, लेकिन पुरानी पीढ़ियाँ नई पीढ़ियों की तरफ समझपूर्वक निकट आ सकती हैं। बच्चा माँ की तरफ नहीं लौट सकता—लेकिन माँ बच्चे के लिए अनजान रास्तों पर छाया बन सकती है"**

●

(क्रमशः)

**संकलन : श्री एन. पी श्रीवास्तव**

**जबलपुर**

साधकों के प्रश्न और उनके उत्तर

# जीवन और जिज्ञासा

## ● क्या धर्म और विज्ञान में विरोध है ।

नहीं, विज्ञान को जानना अधूरा ज्ञान है, वह ऐसा ही है कि सारे जगत् में तो प्रकाश हो और मेरे अपने ही घर में अंधेरा हो, ऐसे अधूरे ज्ञान से ....अपने को ही न जानने से ... ...जीवन दुःख में परिणित हो जाता है जीवन शाँति, संतोष और कृतार्थता से भरे, इसके लिये वस्तुओं को जानना ही पर्याप्त नहीं है । उस तरह समृद्धि आ सकती है, पर धन्यता नहीं आती है । उस तरह परिग्रह आता है, पर प्रकाश नहीं आता है । और प्रकाश न हो तो परिग्रह बंधन हो जाता है । वह अपने ही हाथों लगाई फांसी हो जाती है । जो संसार को ही जानता है, वह अधूरा है और इस अधूरेपन से दुख पैदा होते हैं ।

संसार को जानने से शक्ति उपलब्ध होती है । विज्ञान उसी की खोज है, क्या देख नहीं रहे हैं कि विज्ञान ने अपरिसीम शक्तियों की रहस्य कुन्जियाँ मनुष्य के हाथों में दे दी हैं पर उस उपलब्ध शक्ति से कुछ भी शुभ नहीं हुआ है । शक्ति आई है पर शाँति नहीं आई है । शाँति पदार्थ को नहीं, परमात्मा को जानने से आती हैं । उसका अन्वेषण धर्म है । अकेली शक्ति, शाँति के अभाव में आत्मघातक है । पदार्थ का ज्ञान, आत्मज्ञान के अभाव में.....अज्ञान के हाथों में शक्ति है, उससे शुभ फलित नहीं हो सकता है ।

अब तक विज्ञान और धर्म में, संसार और आध्यात्म में जो विरोध रहा है, उसका परिणाम अशुभ हुआ है । जिन्होंने मात्र विज्ञान की खोज की है, वे शक्ति शाली हो गये हैं, पर अशाँत और संतापग्रस्त हैं । जिन्होंने मात्र धर्म का अनुसंधान किया है वे शाँत हो गये हैं पर अशक्त और दरिद्र हैं । यह अब तक की साधना खंडित रही है । अब तक सत्य की पूरी और अखंडित साधना नहीं हुई है । मैं शक्ति और शाँति को अखंडित रूप में देखना चाहता हूं । मैं विज्ञान और धर्म में सम्मिलन को चाहता हूं । उससे पूर्ण मनुष्य का जन्म होगा और एक पूर्ण संस्कृति का भी, जो अंतर बाह्य दोनों रूपों में समृद्ध होगी । मनुष्य न तो मात्र शरीर ही है, न मात्र आत्मा ही, वह दोनों का सम्मिलन है । इसलिये उसका जीवन किसी एक पर ही आधारित हो तो अधूरा हो जाता है ।

●

संकलन : श्री निष्कलंक
गाडरवारा

---

( आप भी अपने प्रश्नों को सम्पादकीय कार्यालय में भेजकर, आचार्य श्री की मौलिक एवं चिन्तना-युक्त जीवन दृष्टि को पा सकते हैं । )

**पिछले अंकों में आप पढ़ चुके हैं :—**

★ वृद्धों का आदर होना चाहिये, लेकिन पुराने का नहीं।

★ स्वर्ण युग कभी भी आता नहीं है, हमेशा भविष्य में होता है।

★ जीवन का अर्थ उन्हीं को प्रगट होता है, जो मृत्यु से जूझने को तैयार हो जाते हैं, जो मरने को तैयार होते हैं, वे ही केवल जीवन के रस को, आनन्द को उपलब्ध कर पाते हैं, जो मरने से भयभीत हो जाते हैं, वे मरने से पहिले जीवन में बहुत बार मर जाते हैं।

★ असुरक्षित होने में जिंदगी का रस है। युवा चित्त का लक्षण है खतरे की खोज भारत में युवा पीढ़ी पैदा नहीं होती, क्योंकि खतरे का आकर्षण नहीं है। हम पैदा होते से ही सुरक्षा, सुविधा और बचाव में लग जाते हैं और ये जान लेना जरूरी है कि जिस कौम ने सुरक्षा को बहुत मूल्य दे दिया, वह कौम मर जाती है और बूढ़ी हो जाती है।

★ अगर हम मरने के लिए तैयार हैं, तो इस जमीन पर फिर हमें कोई नहीं मार सकता है और मरने की हमारी हिम्मत नहीं है, तो हम मर चुके और रोज-रोज हमें मरना पड़ेगा।

★ हमारा युवक जो विद्रोही कहलाता है—वह बहुत छोटी-मोटी चीजों को तोड़कर अपने मन को तृप्ति दे लेता है। नहीं, यह नासमझी है—कोई युवा-मन का लक्षण नहीं। जिंदगी में बड़े सवाल और बड़ी समस्यायें हैं, हजारों वर्षों के बोझ हैं—उनको तोड़ना है।

और—अब आगे पढ़िये युवकों के जीवन पर आचार्य श्री की क्रांतिकारी सृजनात्मक जीवन दृष्टि :

**युवकों से वार्ता**

# युवा पीढ़ी और भविष्य

ऐसे नहीं चलेगा, जिन्दगी को बदलना हो तो मुझे खोजना होगा कि क्या करना है ? और तब तोड़ने की ताकत फिजूल चीजों में बिल्कुल नही लगानी पड़ेगी क्योंकि वही ताकत बड़ी चीजों को तोड़ सकती है। अब हिन्दुस्तान में बहुत चीजें तोड़ने को हैं, लेकिन मुझे समझ में नहीं आता कि हम उन चीजों को तोड़ने को तत्पर हैं।

हिन्दुस्तान में बड़ा प्रश्न हिन्दु, मुसलमान को तोड़ने का है। जैन, ईसाई को तोड़ने का है, सिक्ख, पारसी को तोड़ने का है। अगर हिन्दुस्तान में युवकों का समाज पैदा होता है तो उसे कश्त करना चाहिये कि हिन्दुस्तान में २० साल बाद पता लगाना मुश्किल हो कि कौन हिन्दू है, कौन जैन है, कौन ईसाई और मुसलमान है। तो हिन्दुस्तान खड़ा होगा और जबतक ये पागलपन के बटवारे खड़े हुये हैं, हिन्दुस्तान खड़ा नहीं होगा, हिन्दुस्तान की जमीन दो हिस्सों में टूट गई उसी पागलपन के पीछे और हिन्दुस्तान के नेता समझाते रहे कि हिन्दु मुसलिम भाई भाई। वे समझाते रहे भाई-भाई और भाई-भाई छुरे चलाते रहे। जबतक हिन्दू, हिन्दू है और मुसलमान, मुसलमान है, तबतक छुरा चलेगा चाहे तुम कितना ही समझाओ कि भाई-भाई हैं। बीमारियों को स्वीकार ही कर लेने का मतलब खतरा है।

जरूरत है मुल्क के युवकों को कि वे कहदें कि न कोई हिन्दू है और न कोई मुसलमान है। हिन्दू-मुसलिम भाई भाई, इसका कोई मतलब नहीं, मलेरिया, प्लेग, भाई भाई, इसका कोई मतलब नहीं। बीमारियों के भाई भाई होने से बीमारियाँ कमजोर नहीं होतीं और मजबूत हो जाती हैं। हिन्दुस्तान ४० साल तक सीखता रहा हिन्दु-मुसलिम भाई भाई और कुल फल ये हुआ कि हिन्दुस्तान दो टुकड़ों में टूटा और उन टुकड़ों में टूटने के बाद लाखों लोगों की हत्या हुई। ये परिणाम हुआ और आज भी जारी है वही सब और जारी रहेगा। अगर हिन्दुस्तान के युवकों को ख्याल हो कि यह मुल्क खड़ा हो सके तो हिन्दुस्तान से इस तरह के नाम जो आदमी को अलग करते हैं, उनको समाप्त कर देने की जरूरत है। मत तोड़ो फर्नीचर, तोड़ दो हिन्दु-मुसलमान को, जैन को, बौद्ध को, इसाई को, इनको नहीं टिकने देना है।

इसका ये मतलब नहीं है कि मैं कहता हूं कि धर्म को नहीं टिकने देना है बल्कि इसका मतलब यह है कि जिस दिन हिन्दु मुसलमान नहीं होंगे, उसी दिन धर्म भी हो सकता है। इनके कारण धर्म भी नहीं हो पाता। धर्म के दुश्मन नास्तिक नहीं हैं, धर्म के बुनियादी दुश्मन पुरोहित, पंडित वे सब धर्म के दुश्मन हैं। धर्म बुनियादी रूप से व्यक्तिगत बात है। एक-एक व्यक्ति की परमात्मा की खोज का नाम धर्म है। धर्म के संगठनों को कोई भी जरूरत नहीं है। धर्म के संगठनों की क्या जरूरत ? अगर आपको प्रार्थना करनी है तो अकेली करनी है, ध्यान करना है तो अकेले करना है, प्रभु का स्मरण करना है तो अकेले करना है। फौज बनाने की क्या जरूरत है ? नहीं कोई जरूरत नहीं है। फौज बनाना पालिटिक्स है, धर्म नहीं। और हिन्दु, मुसलमान ईसायिअत सब राजनीति की शक्लें हैं छिपी हुई, उनका धर्म से कोई संबंध नहीं। इसलिए नाम धर्म का है, खेल राजनीति का है। नाम मंदिर है, नाम मसजिद है, पीछे देवता राजनीति का है। परमात्मा न मंदिर में है, न मसजिद में है और इसलिए मंदिर मसजिद के नाम से

**धर्म बुनियादी रूप से व्यक्तिगत बात है।**
**एक एक व्यक्ति की परमात्मा की खोज का नाम धर्म है।**

जितनी हत्यायें और खून हुये हैं, उतना और किसी नाम से नहीं हुआ है। अब तक दुनियाँ में नास्तिकों ने किसी की हत्या की है, पता है, नास्तिकों ने कितने मकान जलाये कितने बच्चे मारे और कितनी स्त्रियों की इज्जत लूटी। नास्तिकों के ऊपर कोई जुर्म नहीं मालूम होते और आस्तिक बहुत पापी मालूम पड़ते हैं ये आश्चर्यजनक है। जुर्म होने चाहिये थे नास्तिकों के ऊपर, लेकिन जुर्म हैं आस्तिकों के ऊपर। कुछ मतलब है। इसमें आस्तिक कोई भी नहीं हैं ये आस्तिक का धोखा है। सच में जो आस्तिक होता है, वह न हिन्दू रह जाता है, न मुसलमान, न ईसाई। वह तो परमात्मा के प्रेम से इतना भर जाता है कि उसे अपने सिवाय सब कुछ अपने ही जैसा दिखाई पड़ता है। उसे अपने से भिन्न कोई दिखाई नहीं पड़ता। अगर एक धार्मिक समाज पैदा करना है तो धर्मों से

छुटकारा चाहिए तो धर्मों को तोड़ डालो, मत तोड़ो कुर्सी मत तोड़ो फर्नीचर, मत फेंको पत्थर मकानों पर तो पता चलेगा कि युवक समाज पैदा हो रहा है।

बहुत चीजें तोड़ने को हैं, गरीबी को तोड़ना है। गरीबी सब तरह के पापों की जन्मदात्री है। नहीं, भ्रष्टाचार को रोकने का कोई उपाय नहीं है जब तक कि हम गरीबी को न तोड़ दें। देश के युवक को तय करना होगा कि वह गरीबी को उखाड़ फेंके जिसका हमारे मन में ख्याल ही नहीं है और ख्याल इसलिये नहीं है कि हममें से हरएक अपनी अपनी गरीबी तो उखाड़ना चाहता है, लेकिन समाज की गरीबी उखाड़ने को हमारी उत्सुकता नहीं है। ध्यान रहे कि अब दुनियाँ में कोई एक-एक आदमी अपनी गरीबी नहीं उखाड़ सकता। कभी नहीं उखाड़ सकता। पूरे समाज से गरीबी मिटाई जा सकती है। लेकिन घर में बैठ जायें। दिखाई पड़ेगी बगिया, दिखाई पड़ेगा कि मकान है, लेकिन चारों तरफ पड़ी हुई लाशें आपको भी शाँति से जीने नहीं देंगी, सोने नहीं देंगी। मैं गरीब को देखता हूं वह भी दुखी है। अमीर को देखता हूं वह भी दुखी है। क्योंकि दुख और सुख सामाजिक घटनायें है। समाज सुखी होता है, या समाज दुखी होता है, व्यक्ति की खोज खतरनाक है। व्यक्ति की धारणा मिटा देनी है, समाज की एक धारणा विकसित करनी है। जरूर विद्रोह के लक्षण शुरू हुये हैं, उनका स्वागत किया जाना चाहिये। मैंने कल कहा है कि युवा पीढ़ी अभी है नहीं, लेकिन थोड़े बहुत विद्रोह के जो लक्षण दिखाई पड़ते हैं, यद्यपि गलत रास्तों पर है तो भी मैं उनका स्वागत करता हूं क्योंकि आज अगर विद्रोह गलत रास्तों पर है तो कल ठीक रास्तों पर आ सकता

**"युवा पीढ़ी के पैदा होने का अर्थ है : छुटपुट तोड़-फोड़ की बातें नहीं, एक सृजनात्मक विद्रोह। एक क्रियेटिव रिबेलियन।"**

हिन्दुस्तान की पूरी दृष्टि अकेले तक, व्यक्तिवादी रही है। अपना मकान बना लेना है अपनी खेती कर लेनी है, अपना स्वर्ग खोज लेना है, अपने मोक्ष चले जाना है। अपनी फिकर है, समाज की कोई धारणा, सोसायटी का कोई कन्शेप्ट, कोई हम सब इकट्ठे हैं, और हमारा जीवन इकट्ठा है और हम सुख से रहेंगे तो सब सुख से रहेंगे और दुख से रहेंगे तो सब दुख से रहेंगे, इसकी कोई धारणा नहीं है। अगर नई पीढ़ी को कुछ करना है तो व्यक्ति की धारणा को मिटा देना चाहिये। समाज की एक धारणा विकसित करनी चाहिए कि जीवन का सुख दुख एक सामूहिक घटना है। यह असंभव है कि पूरा गाँव बीमार हो और एक आदमी स्वस्थ्य रह जाये। यह भी असंभव है कि पूरा गाँव गरीब हो और एक आदमी अमीर हो जाये। उसकी अमीरी भी सुख नहीं हो सकती। चारों तरफ मरघट हो और आप अपनी बगिया लगाकर है। विद्रोह के न होने के बजाय, विद्रोह का होना हमेशा बेहतर है।

लेकिन अभी युवा पीढ़ी पैदा नहीं हुई है। युवा पीढ़ी के पैदा होने का अर्थ है, छुटपुट तोड़फोड़ की बातें नहीं, एक सृजनात्मक विद्रोह। एक क्रियेटिव रिबेलियन। हम कुछ बनाने की आकाँक्षा से प्रेरित होकर कुछ तोड़ना शुरू करें, हमारे सामने कोई कल्पना हो, कोई योजना हो कि हम यह करना चाहते हैं, यह बनाना चाहते हैं। एक मित्र ने पूछा है कि मैं क्या चाहता हूं कि युवक क्या बनाने की कोशिश करें। तीन छोटी-छोटी बातें मैं आपसे कहना चाहूंगा।

एक, भारत के चित्त में जीवन के प्रति प्रेम जगाने को कोशिश, जीवन के प्रति हमारा प्रेम नहीं है। साधु और सन्यासियों ने बहुत जहर हमारे मनों में भर

दिया है और वह जहर है कि जीवन व्यर्थ है, असार है, छोड़ दो जीवन, भाग जाओ। अगर मेरा बस चले तो ५० साल तक किसी साधु सन्यासी को किसी बस्ती में घुसने का कोई अवसर नहीं होना चाहिये। जिनको वैराग्य सीखना हो तो वह गाँव के बाहर वैराग्य सीखें, उनका उपदेश सुनें, लेकिन गाँव के भीतर आने नहीं देना चाहिये। क्यों? पाँच हजार वर्षों से भारत के मन में जीवन की असारता और जीवन को व्यर्थ मानने का ऐसा थोथा उपदेश थोपा जा रहा है कि हमारे प्राणों में लगने लगा है कि जीवन में न कोई रस है न कोई अर्थ है। जीवन एक व्यर्थता है, जिसको बोझ की तरह ढोना है। खोज तब जीवन की नहीं है खोज मोक्ष की है, जो खतरनाक बात है। एक बारगी यह बात भारत के युवा चित्त में स्पष्टतः बैठ जानी चाहिये कि जीवन में परम आनन्द की संभावना है और जीवन के रस में जो जितना गहरा उतरता है वह उतना ही परमात्मा के निकट पहुंचता है। जीवन और परमात्मा में विरोध नहीं है, क्योंकि अगर जीवन और परमात्मा में विरोध होता तो परमात्मा को बहुत पहले जीवन बन्द कर देना चाहिये था। जीवन की कोई जरूरत न थी। लेकिन परमात्मा अनूठा है कि जीवन को अनन्त अनंत रूपों में पैदा किये चला जाता है। लेकिन परमात्मा से भी ज्याद। समझदार हमारे महात्मा हैं—वे कहते हैं कि जीवन व्यर्थ है। जीवन छोड़ने योग्य है, जीवन त्यागने योग्य है। बहुत हो चुकी त्याग की,छोड़ने की बातें। इन बातों के कारण पूरे मुल्क का, पूरे देश का चित्त उदास हो गया है। कुछ भी खोजने को नहीं है तो चित्त उदास हो ही जावेगा। जीवन आनन्दपूर्ण नहीं है तो चित्त उदास हो ही जावेगा। जीवन एक आनन्द की घटना है। एक एक क्षण श्वाँस लेना परम आनन्द है और परमात्मा के प्रति धन्यवाद है। यह भाव जीवन की स्वीकृति का, लाइफ अफरमेशन का एक भाव पूरे मुल्क के मन में पैदा होना जरूरी है।

मैंने सुना है एक मंदिर के पास बहुत मजदूर काम करते थे। एक युवक, एक अजनबी वहाँ से गुजरता था। उसने पत्थर तोड़ते हुये एक मजदूर से पूछा कि तुम क्या कर रहे हो? उस मजदूर ने हथौड़ा नीचे पटक दिया और क्रोध से जलती हुई आँखें ऊपर उठाईं और कहा: दिखता नहीं, दिखाई नहीं पड़ता कि पत्थर तोड़ रहा हूं, आँखें नहीं हैं आपके पास। फिर वह पत्थर तोड़ने लगा, वह व्यक्ति तो बहुत हैरान हुआ। उसने तो सिर्फ एक बात पूछी थी, इतने क्रोध की क्या जरूरत थी। फिर उसने दूसरे व्यक्ति से पूछा वह भी पत्थर तोड़ता था, मंदिर के दूसरे किनारे। पूछा मित्र, क्या करते हो? उस व्यक्ति ने बामुश्किल सिर ऊंचा उठाकर कहा: जैसे सिर पर बोझ रखा हो, उदास आँखों से सिर ऊपर उठाया और कहा: क्या करता हूं, बाल-बच्चों के लिये रोटी कमाता हूं। फिर उसने धीरे से हाथ उठाकर पत्थर तोड़ना शुरु कर दिया। फिर उस आदमी ने मंदिर की सीढ़ियों पर चढ़कर तीसरे आदमी से पूछा, गीत गुनगुनाता था साथ में वह, पूछा: मेरे दोस्त क्या करते हो? वह आदमी खड़ा होकर नाचने लगा और कहा: पूछते हो क्या करता हूं, भगवान का मंदिर बना रहा हूं। वह फिर पत्थर तोड़ने लगा, उसी गीत की ध्वनि के साथ। वह अजनबी हैरान हुआ, वे तीनों लोग एक ही काम कर रहे थे। तीनों पत्थर तोड़ते थे। लेकिन एक क्रोध से, क्रोध से भरा होगा। दूसरा उदासी से, उदासी से भरा होगा, तीसरा आनन्द से, आनन्द से भरा होगा। तीनों पत्थर तोड़ते थे। लेकिन एक का पत्थर तोड़ना, गीत गाना बन गया था। जिन्दगी वैसी ही हो जाती है, जैसा

**"जिन्दगी वैसी ही हो जाती है, जैसा हम सोचते हैं। मैं चाहता हूँ कि युवा पीढ़ी जिन्दगी को एक गीत समझे। वैराग्य की, भागने की, पलायन की, एस्केप की सारी की सारी धारणाओं को जमीन से उखाड़ फेक देना चाहिए।"**

हम सोचते हैं। जिन्दगी त्यागने योग्य है तो फिर जिन्दगी एक उदासी हो जायेगी। जिन्दगी तोड़ने योग्य है, भागने योग्य है तो जिन्दगी एक क्रोध हो जायेगी। जिन्दगी जीने योग्य है और परमात्मा को धन्यवाद देने योग्य है तो जिन्दगी एक आनन्द हो जायेगी। मैं चाहता हूं कि युवा पीढ़ी जिंदगी को एक गीत समझे। वैराग्य की, भागने की, पलायन की, एस्केप की सारी की सारी धारणाओं को जमीन से उखाड़ फेंक देना चाहिये। और इसका यह अर्थ नहीं है कि जो मैं आपसे कह रहा हूं वह धर्म विरोधी बात है। इसका अर्थ यह है कि मैं आपसे कह रहा हूं कि वैराग्य ही धर्म विरोधी है। मैं आपसे कहता हूं कि जीवन के रस को परिपूर्ण कृतार्थता में स्वीकार करना ही धार्मिक व्यक्ति का लक्षण है। जो व्यक्ति जीवन को उसके परम आनन्द में स्वीकार करता है, वह एक दिन जीवन में इतनी खुशी से भर जाता है कि उसके सारे प्राण और श्वाँस परमात्मा को धन्यवाद देने लगते हैं। रवीन्द्रनाथ मरण शैय्या पर पड़े थे। किसी ने जाकर कहा कि अबतो प्रार्थना करो परमात्मा से कि जन्म मरण से छुटकारा करवा दे, आवागमन से मुक्ति हो जावे। रवीन्द्रनाथ बेहोश थे और उन्होंने आंख खोली और कहा : आवागमन से मुक्ति। मैं तो निरंतर यही प्रार्थना करता हूं कि तूने मुझे योग्य पाया हो अपने जीवन में तो मुझे बार बार जीवन में भेज देना। बहुत खुशी थी तेरे फूलों में, बहुत रस था तेरे तारों में, बहुत आनन्द था तेरे जीवन में। एक एक चीज अनूठी थी, अद्‌भुत थी, मेरी योग्यता नहीं थी जो मैंने पाया, मेरी योग्यता नहीं थी जो मैंने देखा। मेरी योग्यता नहीं थी जो मैंने जिया। अपरंपार तेरी कृपा थी, अगर तूने मुझे योग्य पाया हो तो बार-बार मुझे भेज देना। मैं कैसे कहूं कि छुटकारा चाहता हूं। रवीन्द्रनाथ के इस गीत के भाव को एक एक प्राणों तक पहुंचा देना जरूरी है। जीवन एक आनन्द है, एक सूत्र।

और जैसे ही हमारे प्राणों में यह बात छा जायेगी कि जीवन एक आनन्द है, हम जीवन को सृजन करना शुरू कर देंगे। जैसे ही हमारे प्राण इस खुशी से भर जायेंगे कि जीवन एक खुशी है हम खुशीकी वर्षा करना शुरू कर देंगे।

( समापन किश्त अगले अंक में )

संकलन : श्री जगदम्बा शर्मा,
जबलपुर

★ स्वतंत्रता आत्मा का स्वरूप है। इसलिये संकल्प हो तो कैसी भी परतंत्रता को क्षण में ही तोड़ा जा सकता है। संकल्प का, अनुपात ही स्वतंत्रता का अनुपात है।

★ प्रभु की खोज क्या है ? अपने खोये घर की खोज। संसार में मनुष्य बेघर है और अजनबी है।

★ मैं रोज ही मर जाता हूं—वस्तुतः प्रतिक्षण ही मर जाता हूं और इसे ही मैंने जीवन का—चिर जीवन का रहस्य जाना है। जो अतीत को ढोता है, वह मृत को ढोने के कारण मृत होता है।

# बिखरे फूल

★ मैं दो ही प्रकार के मनुष्यों को जानता हूं। एक तो वे जो सत्य की ओर पीठ किये हुये हैं और दूसरे वे जिन्होंने सत्य की ओर आँखें उठाली हैं। इन दो वर्गों के अतिरिक्त और कोई वर्ग नहीं है।

★ विचार शक्ति वैसे ही है जैसे विद्युत या गुरुत्वाकर्षण। विद्युत् का उपयोग हम जान गये हैं लेकिन विचार का उपयोग अभी सभी को ज्ञात नहीं है। फिर जिनको ज्ञात है वे भी उसका उपयोग नहीं कर पाते है क्योंकि उस उपयोग के लिये स्वयं के व्यक्तित्व का आमूल परिवर्तन आवश्यक है।

★ सत्य और स्वयं के मध्य कोई अलंघय खाई नहीं है, सिवाय साहस के अभाव के।

★ मनुष्य भी कैसा अद्भुत है, उसके भीतर कूड़े करकट की गंदगी भी है और स्वर्ण की अमूल्य निधि भी। और हम किसे उपलब्ध हो जाते हैं, यह बिल्कुल ही हमारे हाथ में है।

★ प्रभु को भीतर पाते ही सर्वत्र उसीके दर्शन होने लगते। हैं वस्तुतः जो हममें होता है, उसकी ही हमें बाहर भी अनुभूति होती है। ईश्वर नहीं दिखाई पड़ता है, तो जानना कि अभी तुमने उसे भीतर नहीं खोजा है।

★ सत्य का सृजन नहीं करना है। उसका सृजन किया भी नहीं जा सकता। और जिसका सृजन हो सके जानना कि वह असत्य है, सत्य का सृजन नहीं, दर्शन होता है। स्वयं के पास उसे ग्रहण करने वाली आँखें भर हों तो सत्य तो सदा उपस्थित है।

★ 'जो है' उसे जानने के लिये स्वयं को दर्पण बनाना आवश्यक है। विचारों की छायायें चित्त को अविकृत नहीं रहने देती हैं। जैसे ही विचार शाँत होते हैं और चित्त शून्य, वैसे ही भीतर का वह दर्पण उपलब्ध हो जाता है जो कि सत्य के प्रतिफलन में समर्थ होता है।

संकलन : श्री राधेरमण मिश्रा,
जबलपुर

## एक महत्वपूर्ण क्रांतिकारी प्रवचन :

# धर्म और राजनीति

पिछले अंकों में आप पढ़ चुके हैं :

- धर्म जीवन कला की आत्मा है तो राजनीति जीवन कला का शरीर है।
- राजनीति धर्म से निरपेक्ष होकर सड़ा हुआ शरीर हो जाती है।
- धर्म राजनीति से विहीन होकर अदृश्य हो जाता है और खो जाता है।
- राजनीतिज्ञ धर्म को दूर रखकर जीवन में ऊंचे उठने की सम्भावना को खो देता है। और राजनीति धर्म से अलग होकर सिर्फ कूटनीति रह जाती है।
- कमजोर धार्मिक आदमी ने धर्म से राजनीति को सदा दूर रखा है—क्योंकि सत्ता में आते ही ऐसे व्यक्ति का जो असली आदमी—जो बुरा आदमी भीतर छिपा है, वह प्रगट हो जायेगा।
- राजनीतिज्ञ डरता है धर्म से, धार्मिक डरता है राजनीति से। और इसलिये दुनिया में एक रिपट्, एक खाई पैदा हो गई है। जिस दिन धर्म ऐसे साधु पैदा करेगा जो सैनिक भी हो सकते हैं, जिस दिन धर्म ऐसे साधु पैदा करेगा जो सत्ता पर भी पैर रखकर जीवन को संचालित कर सकते हैं तभी हम जीवन को बदलने में समर्थ हो सकते हैं, अन्यथा नहीं।
- गांधीजी ने एक प्रयोग किया था, गांधीजी शायद दुनिया के पहले धार्मिक आदमी हैं, जिन्होंने राजनीति से भागने की कमजोरी जाहिर नहीं की। लेकिन भारत में जब सत्ता आई तो उनका चित्त डवांडोल हो गया और भारत की वह पुरानी आदत काम कर गई कि सन्यासी को सत्ता से क्या प्रयोजन ? और गांधीजी ने सत्ता दूसरों के हाथ में देकर भारत का जो अहित किया है उसे हजारों साल तक पूरा नहीं किया जा सकता।
- अच्छे आदमी ने मनुष्य जाति के कुछ नुकसान किए हैं, उनमें से एक नुकसान यह हैं कि अच्छा आदमी हमेशा बुरे आदमी के लिये जगह खाली कर देता है। वह हमेशा हट जाता है और कहता है आप आ जाइए, क्योंकि मैं तो अच्छा आदमी हूं—मैं झगड़ा झंझट नहीं करता हूं।
- अच्छे आदमी की हमें एक योग्यता यह भी माननी होगी कि वह बुराई से लड़ने के लिये सदा तत्पर है। मैं कहता हूं कि अच्छे आदमी को सत्ता में पहुंचाने के समग्र उपाय करने चाहिये और सारे देश में चेष्टा की जानी चाहिए कि अच्छे आदमी को हम सत्ता में भेजें।
- मेरा तो अपना विचार है कि एक एक गाँव में नागरिक समितियाँ हों जो अच्छे आदमी को सत्ता में भेजें।

और अब यह अंतिम किश्त पढ़िये जो आगामी युग की दूरदर्शी दृष्टि को स्पष्ट करती है :—

एक-एक मुहल्ले की नागरिक समिति होनी चाहिये जो अच्छे आदमी के पास जाये और उससे प्रार्थना करे कि हम तुम्हें खड़ा करेंगे और अगर तुम खड़े नहीं होते तो हम अनशन करेंगे। हम तुम पर दबाव डालेंगे, हम घेराव डालेंगे कि तुम्हें खड़ा होना पड़ेगा, हम अच्छे आदमी को भेजना चाहते हैं। और अच्छे आदमी को भेजने में हिन्दुस्तान को आगे के १० वर्षों तक कमसे कम पार्टी की फिक्र छोड़ देना चाहिये कि वह आदमी किस पार्टी का है। वह कम्युनिस्ट है, कि सोशलिस्ट है, कि लीगी है, कि काँग्रेसी है, कि जनसंघी है। इसकी फिक्र छोड़ देना चाहिये। एक ही शर्त है कि वह आदमी अच्छा है। एक बार हिन्दुस्तान में अच्छा आदमी सत्ता में पहुंच जाये तो हम १० साल बाद यह भी विचार कर सकेंगे कि अच्छे समाजवादी को भेजें कि अच्छे काँग्रेसी को भेजें अभी तो अच्छा आदमी ही प्रश्न है। अभी तो अच्छे आदमी को ही भेजना है। अभी यह सवाल नहीं है कि काँग्रेसी को भेजें कि जनसंघी को भेजें। क्योंकि अगर दोनों बुरे आदमी हैं तो तुम किसी को भी भेजो कोई फर्क नहीं पड़ता है। और आज हालत ऐसी है कि चाहे गलत आदमी किसी भी तरह का झंडा हाथ में लिये हो वे सब चचेरे भाई बहिन हैं, उनमें कोई फर्क नहीं है, उनमें जरा भी फर्क नहीं है। उनके लेबिल अलग हो सकते हैं, कि यह ११ नं० की बीड़ी है, यह २१ नं० की बीड़ी है, यह २३ नं० की बीड़ी है। लेकिन बीड़ी, बीड़ी है और खतरनाक है। इस बात पर जोर देने की जरूरत नहीं है कि किस नम्बर की बीड़ी पीनी है, सवाल यह है कि बीड़ी पीनी है कि नहीं पीनी है। कि हम काँग्रेसी बीड़ी पियेंगे कि जनसंघी बीड़ी पियेंगे, ये सवाल नहीं है। सवाल ये है कि बीड़ी पीनी है कि नहीं पीनी है। कि हम बुरे आदमी को भेजना चाहते हैं कि नहीं भेजना चाहते। लेकिन राजनैतिज्ञ बहुत होशियार है, वह आपकी नजर से यह प्राब्लम हटा लेता है, वह यह समस्या हटा लेता है कि अच्छे आदमी को भेजना है कि बुरे को। वह एक नई समस्या खड़ी करता है। वह कहता है कि काँग्रेसी को भेजना है कि जनसंघी को।

मैंने सुना है कि अगर आप जर्मनी की होटल में जायें तो वे खाने के बाद आपसे पूछेंगे कि आप चाय लेंगे। इसमें आपके समक्ष वे दो विकल्प छोड़ रहे हैं : हाँ या नहीं का। लेकिन फ्रांस में ऐसा नहीं है। वहाँ वे ऐसा नहीं पूछते। वे आपसे खाने के बाद पूछेंगे कि आप कॉफी लेंगे या चाय। इसमें वे आपके समक्ष कोई न कहने का अवसर नहीं दे रहे। ५० प्रतिशत मौके कॉफी के हैं और ५० प्रतिशत मौके चाय के हैं और बहुत सभावना इस बात की है कि आप दो में से एक चुन लेंगे। वे आपको चुनने का मौका नहीं दे रहे हैं मैं चाय लूंगा कि कॉफी लूंगा कि आप सोचेगें कि दूध लूं या कोको लूं लेकिन "नहीं" का ख्याल वे आपके सामने नहीं रख रहे हैं, जिसको चुना जा सके। इसके प्रयोग करके देखे गये और पाया गया कि जिन होटलों में वे ये पूछते हैं कि आप चाय लेंगे वहाँ चाय अथवा कॉफी कम बिकती है। जिन होटलों में वे यह पूछते हैं कि आप चाय लेंगे या कॉफी, वहाँ दोनो में से एक जरूर बिक जाता है। दुनियाँ के राजनैतिज्ञ आपके सामने गलत आलटरनेटिव पेश करते हैं, वे कहते

**"आनेवाले दिनों में अगर भारत की जिन्दगी को हमें धार्मिक और अच्छा बनाना है तो हमें अच्छे आदमी को भेजने की फिक्र करनी चाहिये।"**

हैं कि कांग्रेस को चुनियेगा कि जनसंघ को। सवाल यह है कि अच्छे आदमी को चुनना है कि गलत आदमी को भले आदमी को भेजना है, जिन्दगी की सत्ता के हाथ उसके मजबूत करने हैं या बुरे और गलत आदमी के हाथ मजबूत करने हैं। तो मैं आपसे कहना चाहता हूं कि आने वाले दिनों में अगर भारत की जिन्दगी को हमें धार्मिक और अच्छा बनाना है तो हमें अच्छे आदमी को भेजने की फिक्र करनी चाहिये। निर्दलीय, उनके दल की हमें कोई चिन्ता नहीं करनीहै कि वह किस दल का हो, अच्छा आदमी किसी भी दल का हो, अच्छा होता है और बुरा आदमी किसी भो दल का हो बुरा होता है। दल से कोई फर्क नहीं पड़ता है, लेकिन हमारा दुर्भाग्य है कि हम इन दोनों (धर्म और राजनीति) को अब तक अलग ही मानते रहे और इकट्ठा मानने की हमारी कल्पना अभी भी मजबूत नहीं हुई है। अभी भी आंये, उन्होंने कहा कि ईश्वर नहीं है। उन्होंने जो किताबें पाठ्यक्रम में रखी वे ईश्वर विरोधी हैं, उन्होंने जो पाठ्यक्रम बनाया वह आत्मा को नहीं मानता है। २०–३०साल की शिक्षा के बाद रूस के २० करोड़ लोग मानने को राजी हो गये कि न कोई आत्मा है, न कोई परमात्मा। तो फिर राजनीति से धर्म निरपेक्ष कैसे रह सकता है। यह कैसे संभव है। और जो लोग समझा रहे हैं कि राजनीति से कुछ नहीं लेना देना है धार्मिक आदमी को, उन्हें पता नहीं है कि आने वाले २० वर्षों में अगर धर्म ने उत्सुकता नहीं ली तो धर्म की पूरी की पूरी व्यवस्था को मटिया मेट किया जा सकता है। चीन ७० करोड़ का मुल्क है, राजनीति वहाँ साम्यवादी हो गई तो चीन के सारे मंदिर और मस्जिद खतरे में हैं। वहाँ के सारे आश्रम खतरे में हैं। वहाँ के धर्मग्रन्थ खतरे में हैं, वहाँ के साधु सन्यासी, फकीर खतरे

**दुनिया में अगर धर्म को बचाना है**
**तो धार्मिक लोगों को हिम्मत के साथ**
**खड़ा होना होगा और सत्ता के जगत में**
**प्रवेश करना होगा—**

हमें ऐसा नहीं लगता, अभी भी हमारा ख्याल यह है कि राजनीति एक चीज है। चलने दो उसे, क्या बनता बिगड़ता है।

लेकिन हमें पता नहीं कि सब कुछ बनता बिगड़ता है। हमारा खून, हमारे विचार, हमारा भाग्य, हमारा शरीर, हमारा भविष्य सब कुछ राजनीति तय कर रही है। हमें क्या पढ़ाया जाय कालेज में, स्कूल में वह राजनीति तय कर रही है। हमारे बच्चों के मन कैसे निर्मित किये जायें, वह राजनीति तय कर रही है। रूस की राजनीति बदली। आज २० करोड़ का मुल्क है रूस। आज रूस में ईश्वर को मानने वाला एक आदमी खोजना मुश्किल है। क्योंकि ४० वर्षों में जो राजनीतिज्ञ वहाँ में हैं। आज चीन में किसी का जीवन सुरक्षित नहीं है। आने वाले १० वर्षों में चीन साधु सन्यासियों को समाप्त कर देगा। चीन की पृथ्वी पर एक सन्यासी खोजने से नहीं मिलेगा। एक भिक्षु खोजने से नहीं मिलेगा। एक मन्दिर और मस्जिद खोजने से नहीं मिलेगी। तो फिर राजनीति से धर्म कैसे निरपेक्ष रह सकता है? आज नहीं तो कल हिन्दुस्तान में भी यह होगा।

इसलिये जो धार्मिक लोग समझाते हैं कि अपने मंदिरों में पूजा करो, तुम्हें क्या करना है राजनीति से। अच्छे आदमी को क्या प्रयोजन है, उन्हें पता नहीं है कि राजनीतिज्ञ के हाथ में कितनी ताकत है। और इतनी ताकत उसके पास कभी भी नहीं थी जितनी आज उसके

हाथ में है। आज चीन में माइन्डवाश के लम्बे आँदोलन चल रहे हैं। लाखों लोगों को पकड़ कर उनके दिमाग में जबरदस्ती जो हुकूमत डालना चाहती है डाल रही है। आपको पता नहीं है कि आज इस तरह के रासायनिक ड्रग्ज खोज लिये हैं कि आपको एक इंजेक्शन दिया जाये और आपकी सारी पुरानी स्मृति मिटाई जा सकती है। आपको सारी स्मृति नई की जा सकती है। एक आदमी जो ईश्वर को मानता था और समझता था कि परमात्मा है, उस आदमी को एक इंजेक्शन और कुछ रासायनिक द्रव्य देने के बाद उसकी स्मृति मिटाई जा सकती है, और उसको समझाया जा सकता है कि ईश्वर नहीं है और महीने दो महीने के बाद वह बाहर आकर लोगों से कहेगा कि ईश्वर नहीं है, वह जो मैं समझता था, गलत समझता था, । आज चीन में यह कर रहे हैं, रूस में उन्होंने यह किया और सारी दुनिया में वह होगा। इसलिये धार्मिक आदमी अगर चुपचाप बैठा रहा तो पता नहीं कि वह किस जगह पर बैठा हुआ है। वह जगह नीचे से खिसक रही है। जिस जगह को वह सहारा समझे हुये है, वह बहुत दिन सहारा नहीं रहेगी। नाव में छेद हो गये हैं, वह डूबने के करीब है। दुनिया में अगर धर्म को बचाना है तो धार्मिक लोगों को हिम्मत के साथ खड़ा होना होगा और सत्ता के जगत में प्रवेश करना होगा। मेरी अपनी दृष्टि में तो हिन्दुस्तान का भाग्य उसी दिन बदलेगा, जिस दिन हिन्दुस्तान के साधू सन्यासी और भिक्षु, हिन्दुस्तान के अच्छे और सज्जन लोग सारी राजनीति को अपने हाथ में ले सकेंगे, उसके पहले कभी भी हिन्दुस्तान में कोई सदाचरण की व्यवस्था नहीं हो सकती। लेकिन अच्छा आदमी तो भागता है। उस अच्छे आदमी पर तो विश्वास करना मुश्किल है, वह तो सोचता ही नहीं, वह तो विचार भी नहीं करता। उसकी कल्पना में तो ख्याल भी नहीं आता कि जिन्दगी को बदलने का उसका कोई भी जिम्मा है। अच्छा आदमी पीठ किये हुये खड़ा है इसलिये जब मुझे कहा गया कि मैं आऊँ और राजनीति और धर्म पर कुछ कहूं तो मुझे अच्छा लगा कि मुझे जरूर कुछ बातें कहने जैसी हैं।

संक्षिप्त में मैं अपनी बातें दुहरा दूं कि मैंने क्या कहा। मैंने आपसे यह कहा कि धर्म है आत्मा, राजनीति है शरीर। धर्म है विचार, राजनीति है क्रिया। धर्म है आकाश, राजनीति है पृथ्वी। न हम आकाश में जी सकते हैं न हम सिर्फ पृथ्वी पर जी सकते हैं। हमारे पैर पृथ्वी पर होना चाहिये और हमारा सिर आकाश में उठा हुआ होना चाहिये। हमारा सिर धर्म से संबंधित होना चाहिये और हमारे पैर राजनीति से। हमारे जीवन की सारी क्रिया राजनीति के बिना नहीं चल सकती। और हमारी आत्मा का विकास धर्म के बिना नहीं हो सकता। अगर ऊपर उठना है तो आकाश का भ्रमण करना होगा अगर संभल कर खड़े रहना है तो पृथ्वी पर मजबूत पैर जमे हुये होना चाहिये। हिन्दुस्तान के पैर पृथ्वी पर हमेशा कमजोर रहे। इसलिये एक हजार साल तक हमने गुलामी झेली। इतने बड़े मुल्क ने एक हजार वर्षों तक। साधारण सी ताकत के लोग आये और हमें गुलाम बना लिया। उसका कारण क्या था? उसका बड़ा कारण यह था कि हिन्दुस्तान की धार्मिक जनता यह मानती है कि राजनीति से हमें क्या लेना देना है। हिन्दुस्तान का बड़ा हिस्सा, संख्या का बड़ा भाग यह मानता था कि हमें कोई प्रयोजन नहीं। जब जनता इतनी उपेक्षा रखती हो तो बहुत खतरनाक है यह बात। अगर कल हिन्दुस्तान पर चीन हावी हो जाये तो मैं आपसे कहता हूं कि हिन्दुस्तान के ७५ प्रतिशत लोग अभी भी राजनीति में कोई उत्सुकता नहीं रखते। अगर कल हिन्दुस्तान पर चीन आ जाये तो वे लोग तमाशबीन की तरह देखेंगे और वे कहेंगे कि अच्छा चीन आ गया, तो वे देखेंगे कि देखो अब क्या होता है। पहले अंग्रेज थे, फिर कांग्रेस आई, अब फिर चीनी कम्युनिस्ट आ गये। अब देखो आगे क्या होता है। वे खड़े होकर देखेंगे जैसे वे तमाशबीन हैं, जैसे वे दर्शक हैं।

दूसरे महायुद्ध में जर्मनी ने हमला किया हालेन्ड के ऊपर। हालेन्ड छोटा मुल्क है और गरीब मुल्क है। हालेन्ड की गरीबी, हालेन्ड की कमजोरी कई कारणों से है। बड़ा कारण तो ये है कि हालेन्ड की जमीन समुद्र से नीची है, समुद्र ऊंचा है और जमीन नीची है। तो

हालेन्ड के गाँवों को दीवालें बनाकर समुद्र से रक्षा करनी पड़ती है। हालेन्ड की आधी ताकत समुद्र से बचाव करने में नष्ट हो जाती है। हालेन्ड के पास बड़ी फौजें नहीं हैं, हालेन्ड के पास बड़ी मशीन गन नहीं है, हालेन्ड के पास हवाई जहाज नहीं है, युद्ध का सामान नहीं है। जर्मनी ने तय किया कि हालेन्ड को तो मिनटों में जीता जा सकता है। जर्मनी के सामने हालेन्ड कैसे टिकता। जर्मनी का हमला हुआ और हालेन्ड के लोगों ने सोचा हम क्या करें ? तो हालन्ड के लोगों ने जो बात सोची वह सोचने जैसी है, समझने जैसी है, हिन्दुस्तान वैसी बात कभी नहीं सोच सकता। तो उनने सोचा हम तो गुलाम हो जावेंगे। लेकिन गुलाम होकर जिन्दा रहना ठीक नहीं। आजाद रहते हुए जिन्दा मर जाना बेहतर है। उन्होंने कहा : जिस गाँव पर जर्मनी का हमला हो, उस गाँव के लोग उस गाँव की दीवाल तोड़ दें। पूरा गाँव समुद्र में डूब जाये और साथ में जर्मनी की फौजें भी डूब जायें। हम अपने गाँव डुबाते चले जायेंगे जो गाँव हारेगा उसको डुबा देंगे। हम पूरे मुल्क को डुबा देंगे समुद्र के नीचे। लेकिन हालेन्ड नहीं बचेगा, एक बच्चा नहीं रहेगा हालेन्ड का जिन्दा, लेकिन गुलाम हम नहीं नहीं होंगे। तीन गाँवों पर हिटलर की फौजें गईं और वापिस लौट गईं। हिटलर ने कहा : ऐसे मुल्क से लड़ना मुश्किल है। तीन गाँव डूब गये, फौजें भी डूब गईं, तीन गाँव पानी के नीचे आ गये और हिटलर ने पहली दफे अपनी डायरी में लिखवाया कि 'आज मुझे पता चला कि संगीनों और बंदूकों और बमों से भी ज्यादा ताकतवर लोगों की आत्मा होती है'। अगर लोग मरने को तैयार हैं तो उनको दुनिया में कोई गुलाम नहीं बना सकता। कौन बना सकता है, गुलाम। ४० करोड लोगों को ३ करोड़ लोग गुलाम बनाये रखे, हजारों मील दूर बैठकर हुकूमत करते रहे और हम पर हुकूमत चलती रही। राजनीतिज्ञ हमें समझाते हैं हममें फूट थी, इस कारण ये हुकूमत चली। गलत समझाते हैं राजनीतिज्ञ, गलत समझाते हैं, सरासर झूठ समझाते हैं। फूट वगैरह कुछ भी नहीं थी। जितनी फूट हममें है दुनिया में सब तरफ है। असली बात यह थी कि यहाँ की जनता के मन में यह भाव था कि राजनीति से हमें क्या लेना देना है। क्या करना है। कोई भी राजा दिल्ली में, कोई बैठें, हमको क्या फर्क पड़ता है। मेहतर को अपने पाखाने धोने पड़ेंगे, चाहे मुगल बादशाह हो चाहे हिन्दु बादशाह हो, चाहे अंग्रेज बादशाह। चमार को जूते सीने पड़ेंगे। किसान को खेती का काम करना पड़ेगा, हल बखर चलाना पड़ेगा। हमको क्या फर्क पड़ता है। हमारी जिन्दगी में क्या फर्क आता है। और हिन्दुस्तान में जो लोग शिक्षा देने वाले थे, साधु सन्यासी उन्होंने बिल्कुल बात भी नहीं उठाई, एक शब्द भी नहीं उठाया। अगर कोई हिन्दुस्तान का इतिहास उठाकर देखेगा एक हजार वर्ष का तो वह पायेगा कि यहाँ के संतों ने एक बार भी नहीं कहा कि लगा दो आग इस गुलामी में। तो दुनिया के लोग बाद में सोचेगें कि संत बड़े कमजोर और नपुन्सक रहे होंगे। इनमें कोई बल न रहा होगा। क्या आत्मा की बातें करते रहे होंगे जो गुलामी को नहीं तोड़ सकते ? उसका कुल कारण इतना था कि हमने धर्म को राजनीति से कभी संबंधित नहीं माना है। इसलिये मैं कहता हूं धर्म के बिना राजनीति केवल मरा हुआ शरीर है और राजनीति के बिना धर्म केवल एक प्रेत आत्मा है। जिसके पास कोई शरीर नहीं है। भूत की तरह जो आत्मा भटकती है, जिसका जिन्दगी से कोई

**अगर लोग मरने को तैयार हैं**
**तो उनको दुनिया में कोई**
**गुलाम नहीं बना सकता--**

स्थान नहीं रह जाता।

अत इन दोनों में संबंध अनिवार्य है। ये दोनों संयुक्त हों और संयुक्त होने में भी सदा ध्यान रहे धर्म सदा ऊपर रहे, राजनीति सदा नीचे रहे। धर्म सिर है, राजनीति है पैर। धर्म आत्मा है, शरीर है राजनीति। राजनीति कभी धर्म के ऊपर हीं बिठाई जा सकती। धर्म जीवन का लक्ष्य है। राजनीति साधन है। धर्म है साध्य। राजनीति है साधन। धर्म है मंजिल। राजनीति है मार्ग। मार्ग कभी मंजिल के ऊपर नहीं हो सकता। अगर यह हमारे ध्यान में हो तो हम आनेवाले दिनों में अच्छे आदमी को ताकत दें, बल दें, अच्छे आदमी को जीवन की बदलने की और सत्ता को हाथ में लेने की सुविधा जुटायें तो कोई कारण नहीं कि आने वाला भविष्य भारत का स्वर्णिम और सुन्दर नहीं हो सकता हैं। लेकिन जैसा आज चल रहा है, ऐसा अगर आगे भी चलता है तो भारत रोज अंधेरे में गिरता चला जायेगा। और मैं आपको कह देना चाहता हूं कि अगर बुरे व्यक्तियों के राज्य से भारत को बचाना हो तो भारत के साधु और सन्यासियों को हिम्मत करनी पड़ेगी। चाहे उनका मोक्ष खो जाये, चाहे उनका परलोक बिगड़ जाये। फिर जन्म ले लेना। जन्म अनन्त है। कोई जल्दी भी क्या है इतनी। बहुत जन्म पड़े हैं, बहुत जन्मों की सुविधा है। फिर उपाय कर लेना साधना का। लेकिन एक बार हिन्दुस्तान के सारे अच्छे आदमियों को इकट्ठे होकर एक २० साल हिन्दुस्तान के भाग्य को सुन्दर बनाने की कोशिश जरूर करनी चाहिये।

ये थोड़ी सी बातें मैंने रखीं। मेरी बातों से सहमत होना जरूरी नहीं है। अगर आप मेरी बातों को सोचेंगे भी तो मेरा काम पूरा हो जाता है। हिन्दुस्तान सोच भी नहीं रहा है। जय महात्मा गांधी की, बस इतना काम है हमारा। सोचना विचारना नहीं है। गांधी पर बस जय जयकार करो, लेकिन सोचो मत कि गांधीजी ने क्या किया और क्या नहीं किया। सोचना मत कि गांधीजी से क्या भूल हो गई। सोचो मत कि गांधीजी की भूल कहीं मंहगी तो नहीं पड़ गई है। और उसे बदलने के लिये कुछ किया जाय या नहीं किया जाये। मैंने जो कहा मुझसे सहमत होने की जरा भी जरूरत नहीं है। लेकिन मेरी बातों पर अगर सोचना हो सकता है सोच विचार पैदा हो तो मार्ग स्पष्ट हो सकता है, और जिन्दगी को बदलने में हम समर्थ हो सकते हैं।

समाप्त

**संकलन : श्री श्यामनारायण चौकसे**
**जबलपुर**

* जो हुआ है, वह अनहुआ हो सकता है। जो किया है, वह अनकिया हो सकता है। मनुष्य कर्म में बंधने में समर्थ है तो मुक्त होने में भी समर्थ है। उसकी भी परतंत्रता भी उसकी स्वतंत्रता ही है।

# स्मृतियों की परतें

२८ मार्च' ६९ .....। आचार्य श्री बम्बई-हाबड़ा मेल से पटना जा रहे थे, 'द्वितीय विश्व हिन्दू धर्म सम्मेलन' में भाग लेने। क्रांति जी, चौकसे जी, एवं मैं भी साथ था। इलाहाबाद पहुंचने पर हम तीनों अपने-अपने डिब्बों से उतरकर शीघ्र ही आचार्य श्री के वातानुकूलित डिब्बे के पास पहुंचे। वे भी उतरकर प्लेट-फार्म पर खड़े थे। हमने कुली से सामान उठवाया और प्लेट फार्म नं० १ से शायद नं० ४ पर गए जहाँ से हमें तूफान–एक्सप्रेस पकड़नी थी। हमने कुली से तूफान-एक्सप्रेस पर आकर सामान रखने को कहा और वह चला गया।

इसी बीच पता चला कि 'तूफान' डेढ़ घण्टे लेट है और आसाम-मेल आने वाली है। क्रांति जी एवं चौकसे जी ने आसाम-मेल से ही चले चलने की उत्सुकता जतायी। आचार्य श्री हमारी बात मान गए और किसी कुली को बुलाकर सामान उठवाने को कहा। मैंने हिचकते हुये कहा—'लेकिन आचार्य जी, उस कुली को तो बड़ा विचित्र अनुभव होगा जो सामान ले आया था। [ मेरा इशारा उसकी मजदूरी की ओर था। ] आचार्य जी ने मुसकराते हुए सहज भाव से उत्तर दिया—'उसका नंबर ३८९ है, कभी ढूँढ़ लूंगा और दे दूंगा, मैं तो आता-जाता ही रहता हूं।' और मैं चकित रह गया कि उस अस्त-व्यस्त भागम-भाग में भी वे उसका नम्बर नोट करना न भूले थे।

यह बता देना भी अप्रासंगिक न होगा कि गाड़ी छूटने के पूर्व ही वह कुली आचार्य श्री को दिख गया था और उसे बुलाकर उन्होंने उसकी मजदूरी दे दी।

प्रस्तुतकर्त्ता : शिव०

[देश के कौने-कौने से बड़ी संख्या में मित्र-बन्धुओं को आचार्य श्री के निकट आने का अवसर मिला है और मिल रहा है। अतः जिन मित्र को भी आचार्य जी की कोई बात लगातार छूती व स्मृतियों में कोंधती हुई लगती हो, वे इस स्तम्भ में प्रकाशनार्थ अपने संस्मरण भेजें। हमें उन्हें प्रकाशित करने में हर्ष होगा। स्थानाभाव को ध्यान में रखते हुये अभी छोटे-छोटे संस्मरणों को प्रकाशित करने में हमें अधिक सुविधा होगी। ]

नारी जगत

# नारी जीवन और दिशा

**पिछले अङ्क में आप पढ़ चुके हैं :**

★ मनुष्य की पूरी सभ्यता और संस्कृति अधूरी है, क्योंकि नारी के गुणों का कोई दान उसमें नहीं है। मनुष्य ने नारी को पुरुषों की समता में जीने का कोई मौका नहीं दिया परिणाम में मनुष्य की सभ्यता : माधुर्य, प्रेम और सौंदर्य से नहीं भर सकी क्रूर और कड़वी हो गई, कठोर और हिंसक हो गई और अंतिम परिणामों में केवल युद्ध लाती रही।

और–अब पढ़िये "नारी जीवन और दिशा" पर आचार्य श्री के मननीय विचार :—

इस कठोर और हिंसक सभ्यता के निर्माण के पीछे दो बातों का ही हाथ है। एक तो स्त्री के गुणों को कोई सम्मान नहीं दिया गया और दूसरे, स्त्री ने कभी अपने गुणों को विकसित करने की कोई चेष्टा और कोई सक्रिय उपाय नहीं किया। यह जानकर आपको हैरानी होगी, अगर कोई स्त्री पुरुषों के गुणों में आगे हो जाये जैसे जोन आफ आर्क या महरानी लक्ष्मी बाई तो सारे जगत् में इस बात की प्रशंसा होती है कि रानी लक्ष्मीबाई बहुत बहादुर, बहुत सम्मान योग्य स्त्री हैं। लेकिन क्या कभी आपने यह सुना है कि कोई पुरुष स्त्रियों के गुणों में विकसित हो जाये तो उसका कभी भी कोई सम्मान हुआ है ? अगर कोई पुरुष स्त्रियों जैसा प्रतीत हो तो उसका अपमान होगा और कोई स्त्री पुरुष के जैसी प्रतीत हो तो उसका सम्मान होगा और चौरस्तों के ऊपर उसकी मूर्तियाँ खड़ी की जायेंगी। पुरुषों ने अपने गुणों को अनिवार्यरूप से स्वीकार कर लिया है और स्त्रियों ने भी इसपर स्वीकृति दे दी, यह बहुत आश्चर्य की बात है। स्त्रियों ने कभी सोचा भी नहीं कि उनके व्यक्तित्व की भी अपनी कोई गरिमा, अपना कोई स्थान अपनी कोई प्रतिष्ठा है। इन तीन चार हजार वर्ष की गुलामी के बाद एक विद्रोह, एक प्रतिक्रिया (Reaction) पैदा होना शुरू हुई और स्त्रियों ने यह घोषणा करनी शुरू करदी कि हम पुरुषों के समान हैं और बराबर हैसियत और बराबर अधिकार माँगते हैं। लेकिन यह फिर दुबारा भूल हुई जा रही है जिसका शायद आपको पता न हो। उस भूल के संबंध में भी समझ लेना जरूरी है।

मैं कहना चाहता हूं कि स्त्रियाँ न तो पुरुषों से हीन हैं और न समान हैं। स्त्रियाँ पुरुषों से भिन्न हैं, वे बिल्कुल भिन्न हैं। न उनके नीचे होने का सवाल है, न उनके समान होने का सवाल है। स्त्रियाँ पुरुषों से बिल्कुल भिन्न हैं और जब तक स्त्रियाँ अपनी भिन्नता की भाषा में, अपने अलग व्यक्तित्व की भाषा में सोचना शुरू नहीं करेंगी तब तक या तो वे पुरुष की दास होंगी या पुरुष की अनुयायी होंगी और दोनों स्थितियाँ खतरनाक हैं। पश्चिम में स्त्रियों ने एक बगावत की है, एक विद्रोह किया है और परिणाम यह हुआ है कि स्त्रियाँ पुरुषों जैसे होने की दौड़ में, होड़ में पड़ गयीं। जो पुरुष करते हैं, जैसे पुरुष हैं वैसे ही स्त्रियों को भी हो जाना चाहिये। जो शिक्षा पुरुषों को मिलती है वही स्त्रियों को भी मिलनी चाहिये। अगर पुरुष युद्ध के मैदान में लड़ने जाते हैं तो स्त्रियों को भी युद्ध क्षेत्र के ऊपर सैनिक बनकर उपस्थित होना चाहिये। इस बातकी कल्पना भी नहीं आपको कि पुरुषों की नकल में स्त्रियाँ हमेशा द्वितीय कोटि की होंगी, प्रथम कोटि की कभी भी नहीं हो सकतीं। क्योंकि जिन गुणों में वे प्रतिस्पर्धा करने जा रही हैं वे पुरुषों के लिये सहज गुण हैं और स्त्रियों के लिए असहज धर्म। ऐसी स्थिति में स्त्रियाँ एकदम कुरूप, अपने स्वभाव से च्युत, जो हो सकती थीं, उससे वंचित हो जायेंगी और परिणाम बड़े घातक होंगे जिनकी हमें धारणा नहीं, कोई कल्पना भी नहीं।

जो शिक्षा पुरुषों को मिलती है वही शिक्षा स्त्रियों को देना अत्यन्त खतरनाक है, एकदम गलत है। उचित है कि पुरुष गणित सीखे, उचित है कि पुरुष विज्ञान् सीखे, लेकिन बहुत उचित होगा कि स्त्री कुछ और सीखे जो पुरुष नहीं सीखता। उसे जीवन में कुछ और करना है। उसके ऊपर जीवन ने कोई और दायित्व दिया है, कोई दूसरा उत्तरदायित्व है उसके ऊपर। उसके ऊपर प्रेम का, सृजन का कोई दूसरा भार है। गणित सीख लेने से दूकानें चल सकती हैं, बच्चे नहीं बड़े किये जा सकते। साइन्स से फेक्टरी चलती होगी लेकिन परिवार नहीं चल सकते। और परिणाम यह हुआ है कि स्त्री को पुरुष जैसी दीक्षा और शिक्षा और समानता के भाव ने स्त्रियों से जो भी उनका महत्वपूर्ण मातृत्व था वह सब छीन लिया है। उनके भीतर जो भी स्त्रैण था वह सब नष्ट किया जा रहा है। वे करीब-करीब पुरुष की नकल में निर्मित की जा रही हैं और वे बहुत प्रसन्न भी मालूम होती हैं। इस प्रसन्नता के लिये हजार-हजार आँसू आज नहीं तो कल स्त्रियों को रोने ही पड़ेंगे। शायद हमें इस बात का ख्याल नहीं कि स्त्री और पुरुष के चित्त में बुनियादी भेद और भिन्नता है, और यह भिन्नता अर्थपूर्ण है। पुरुष और स्त्री का सारा आकर्षण उसी भिन्नता पर निर्भर है। वे जितने भिन्न हों, वे जितनी दूर हों, उनके भीतर जितनी ध्रुवता ( Polarity ) हो उत्तर और दक्षिण ध्रुवों की तरह उनमें भिन्नता हो उतना ही उनके बीच कशिश, आकर्षण (Gravitation) होगा, उतना ही उनके बीच प्रेम का जन्म होगा, जितना उनका फासला हो, जितनी भिन्नता हो, जितने उनके व्यक्तित्व अनूठे और अलग हों, जितने वे एक दूसरे जैसे नहीं बल्कि एक दूसरे के परिपूरक (Complimentary) हों। अगर पुरुष गणित जानता हो और स्त्रीभी गणित जानती हो तो ये दोनों बातें उन्हें निकट नहीं लातीं। ये बात उन्हें दूर ले जायेंगी। अगर पुरुष गणित जानता हो और स्त्री काव्य जानती हो, संगीत जानती हो, नृत्य जानती हो तो वे ज्यादा निकट आयेंगे, वे जीवन में ज्यादा गहरे साथी बन सकतेहैं। और जब एक स्त्री पुरुषों जैसी दीक्षित हो जाती है तो ज्यादा से ज्यादा वह पुरुष को स्त्री होने का साथ भर दे सकती है लेकिन उसके हृदय के उस अभाव को जो स्त्री के लिये प्यासा और प्रेम से भरा होता है, उस अभाव को पूरा नहीं कर सकती।

( क्रमशः )

संकलन : श्रीमती शशि,
गाडरवारा

# THE HIDDEN TREASURE

## EARTHEN LAMPS

● ACHARYA RAJANEESH

1

I have heard a story. Thousands of years ago, a town with temples of gods got submerged in the sea. The bells of those drowned temples are still ringing. It is possible that the stroke of water makes them ring. Or, they keep ringing on account of the fish running here and there and striking them. Be it as it may, the bells ring even today, and even today, their sweet music can be heard on the sea-shore.

I also wanted to hear that music. Therefore, I went in search of that sea. After several years of wandering, at last I did reach that sea-shore But, behold what was there was the loud tumult of the sea. The strokes of waves after striking on the rocks, were resounding manifold in that lonely place. Neither was there any music nor were the ringing bells of the temples. I kept listening intently on the shore. But there on the shore was nothing, except the sound of breaking waves.

Even so I waited there. In fact, I had forgotten the way back. Now that unknown, uninhabited sea-shore itself was going to be my grave.

And then, even the thought of listening to the bells gradually disappeared. I settled down on the shore of that sea.

Then one night, suddenly I found the bells of submerged temples ringing; and their sweet music started filling my life with joy.

On hearing that music, I got out of my sleep and since then I have not been able to sleep again. Now somebody is constantly awake within me. Sleep has vanished for ever.

And life has been filled with light; because where there is no sleep, there is no darkness.

And I am happy. Nay, I have myself become the happiness incarnate; because how could sadness exist where there was the music of God's temple?

Do you also want to go near that sea shore? Do you also want to hear the music of the submerged temples of God ?

Let us then go. Let us move within ourselves. One's heart itself is that sea; and in its depth is the town of the submerged temples of God.

But only those who are, in all respects, calm and concentrated are able to hear the music of those temples.

How could this music be heard where there is the loud conflict of thought and desire ? Even the desire to find it becomes an obstacle in finding.

2

In one dark night, I was looking at the stars in the sky. The whole town was asleep. I was feeling very compassionate towards those sleeping men. After a day's hard work, poor chaps must have been dreaming about fulfilment of their unfulfilled desires. In dreams they live and in dreams they sleep. They see neither the sun nor the moon nor the stars. In fact, the eyes that see the dreams cannot see that which is there. It is absolutely essential that the dust of dreams should disappear before you can see the truth.

As the night was advancing towards darkness, stars in the sky were increasing. Slowly, the entire sky got glittered on account of them. And not only the sky, I myself got filled up with th ir silent beauty. Does not the sky of the soul get filled up with the star on seeing the stars in the sky ? In reality, man gets filled up with what he sees. He who sees the small, gets filled up with the small; he who sees the large, gets filled up with the large. Eyes are the entrance to the soul. Sitting against a tree, I was just lost in the sky, when from behind some one placed his cold and dead hand on my shoulder. The sounds of his feet were also heard by me. They were also not like the sounds of a living being, and his hand was so lifeless that even in the darkness it took me no time to understand the thoughts in his eyes The contact of his body had brought even the winds of his minds up to me. The person was iving and young. But his life had taken leave of him long ago; and the youth of life had perhaps never come his way.

We both sat down under the stars. I had taken his lifeless hands into my own hands so that they may become

slightly warmer and the heat of my life mayalso flow into them. Fossibly he was alone and love could bring him back to life.

Without doubt, it was not desirable to speak at that time and therefore I kept silent. Sometimes heart finds nearness in silence and the wounds, which words cannot fill up, are healed. Silence can cure them too. Words and sounds are a disturbance and an obstacle in comprehending the full music.

The night was silent and became quiet. That silent music caught us both. He was no longer unfamiliar to me. Even in him I was there. Then his stone-like inactivity came to an end, and his tears gave the news that he was melting. He was weeping and his entire body was trembling. The currents of what was weeping in his heart were touching the threads of his body He kept on weeping, weeping, weeping; and then said : "I want to die. I am extremely poor and disappointed. I have absolutely nothing with me."

I remained silent for sometime more and then slowly told him a story. I said "Friend, I am reminded of a story, A young man told a beggar : 'God has taken away every thing from me. I have no other course except death."

Are you not the same young man ?

That beggar told the young man : "I see a big hidden treasure with you. Will you sell it ? If you sell it, you will gain everything and God will also be saved from bad name".

Are you or are you not the same young man, I do not know. But I am the same beggar and it appears as if the story repeating itself.

The young man was surprised and may be you are also getting surprised. He said : "Treasure ? I have not even a penny with me."

After this the begger started laughing and said : "Come along. Let us go to the king. The king is very clever. He always keeps a deep eye on the hidden treasures. He will definitely purchase your treasure. Even in the past I have taken many a seller of the hidden treasures to him."

That young man was not able to understand. For him the entire talk of the beggar was a puzzle. Even then he started with me towards the palace of the king. On the way, the beggar told him ; "There are a few things which should be settled in advance so that there should be no quarrel before the king. That king is the one who will not leave a thing, whatever its cost,

if he likes it. Therefore, it is also necessary to know whether you are ready or not to sell that thing ?"

That young man said : "What treasure ? What things ?"

The beggar said : "For instance, your eyes ? What will you charge for them ? I can get you upto Rs. 50,000 for them from the king ? Is that amount sufficient ? Or, like your heart and mind ? For them you can get even a lakh each."

That young man was surprised; and felt that the beggar was mad. He said : "Have you gone mad ? Eyes ? Heart?Mind?What is it all that you are talking about ? I cannot sell them at any cost. And why I alone ? Nobody can sell them".

The beggar started laughing and said : "Have I gone mad or you ? When you have so many valuable things which you cannot sell even for lakhs, then why do you pretend to be poor ? Use them. That treasure which is not used is empty even when it is full; and what is used is full even when it is empty. God gives treasures, immense treasures; but one has to search and dig them by oneself. There is no wealth bigger than life and one who does not see wealth even in that cannot find it any where else."

The night was past its middle. I got up and I told that young man : "Go and go to sleep; and tomorrow wake up a different man. Life is as we make it. That is man's own creation. We can make it dead or eternal as we like; and this depends on no one else except our ownselves. Then, death will follow on its own. There is no need to invite it. Invite life, Call the great Light itself. That you can gain only through hard work, effort,resolve and constant application.

● Translated by
DR. DAYANAND BHARGAVA

# WHO AM I

*In 15th June issue, we studied that : 1-Where the knowledge is free from object, there it becomes pure, & that purity, that emptiness itself is the self knowledge. Now in continuation to this the remaining enlightened subject expressing the views of Acharyaji is presented here :--*

In fact, it cannot be searched because it is the innate nature of investigator himself. In this search, the investigator is not different from the investigation itself. Therefore, only those can investigate the self who leave all other investigations. Only those can know who become devoid of all knowledge. By leaving all types of investigation, the consciousness reaches that stage where it has always been

By leaving all types of race the consciousness reaches that spot where it has always stood.

After meditation, somebody asked Lord Buddha, as to what he gained by meditation. Buddha replied, "Nothing; I have lost much, but gained nothing. I have lost my passions, lost my thoughts, lost all struggles and desires; and gained only what had already been gained since times immemorial.

What I cannot lose is
the innate nature.
What I cannot lose, is
God himself.

And what is truth ? That which is immortal, which is ever since, is truth. In order to get at this innate nature it is necessary to wipe away from the consciousness all that which is not true. We know that which is true, only after losing that which can be lost. The truth is gained as soon as we lose our dreams.

Friend, I repeat : "The truth is gained as soon as we lose the dreams. When there is no dream, then whatever remains, is the existence of self. That alone is truth, that alone is freedom."

I MA OHW

# जीवन जागृति केन्द्र, बम्बई द्वारा प्रकाशित

# आचार्य रजनीश साहित्य

प्राप्ति स्थल—जीवन जागृति केन्द्र, एम्पायर बिल्डिंग, रूम नं० ५३, दादाभाई नौरोजी रोड, बम्बई–१

फोन : २६४५३०

| हिन्दी साहित्य | मूल्य रुपया |
|---|---|
| १ साधनापथ | ३–०० |
| २ क्रांतिबीज | ३–०० |
| ३ सिंहनाद | १–५० |
| ४ अमृतकण | ०–५० |
| ५ अहिंसादर्शन | ०–४० |
| ६ मिट्टी के दिये | ३–०० |
| ७ पथ के प्रदीप | ४–५० |
| ८ मैं कौन हूं | २–०० |
| ९ कुछ ज्योतिर्मय क्षण | ०–४० |
| १० नये मनुष्य के जन्म की दिशा | ०–४० |
| ११ सूर्य की ओर उड़ान | १–०० |
| १२ प्रेम के पंख | ०–७५ |
| १३ सत्य के अज्ञात सागर का आमंत्रण | १–२५ |
| १४ अज्ञात की ओर | १–०० |
| १५ नये संकेत | १–७५ |

## नवीन प्रकाशन

| | |
|---|---|
| १ न आंखों ने देखा, न कानों ने सुना | ०–१५ |
| २ क्रांति के बीच सबसे बड़ी दीवार | ०–३० |
| ३ संभोग से समाधि की ओर | ३–५० |
| ४ आचार्य रजनीश : समन्वय, विश्लेषण, संसिद्धि | ७–५० |

| मराठी साहित्य | मूल्य रुपया |
|---|---|
| १ साधनापथ | ३–०० |
| २ सिंहनाद | ३–०० |
| ३ अहिंसादर्शन | ०–५० |
| ४ अमृतकण | ०–५० |
| ५ क्रांतिबीज | २–५० |
| ६ प्रेमाचे पंख | ०–७५ |

## गुजराती साहित्य

| | |
|---|---|
| १ साधनापथ | २–०० |
| २ क्रांतिबीज | २–०० |
| स्पेशल प्रति | २–५० |
| ३ माटी ना दिया | ३–०० |
| ,, स्पेशल प्रति | ३–५० |
| ४ पथ ना प्रदीप | ३–०० |
| ५ सिंहनाद | १–२५ |
| ६ नवा संकेत | १–७५ |
| ७ अमृतकण | ०–५० |
| ८ अहिंसादर्शन | ०–५० |
| ९ केटलीक ज्योतिर्मय क्षण | ०–७५ |
| १० नवा मनुष्य ना जन्म नी दिशा | ०–७५ |

★

Published by

## MOTILAL BANARSIDAS

JAWAHAR NAGAR, DELHI–7

## ENGLISH VERSION

| | | |
|---|---|---|
| 1 | Who Am I | 3·00 |
| 2 | The Earthen Lamps | 3·50 |
| 3 | Wings of love & Random Thoughts | 3 50 |
| 4 | Seeds of Revolutionary Thought | 4 50 |
| 5 | Philosophy of Non–Voilence | 0·80 |
| 6 | Path of Self Realisation | 2·25 |

फोन नं० २६९६ पी० पी०

तीव्र, कुशल एवं विश्वसनीय यात्राओं के लिये

रात व दिन आपकी सेवा में

# नेशनल टैक्सी

आधुनिक साज-सज्जा युक्त, नवीनतम माडल की

## एम्बेसडर डी-लक्स कारें

नया मोटर स्टैण्ड, जबलपुर.

WITH BEST COMPLIMENTS

FROM :

*Hari Kishandas Aggarwal,*

CHAIRMAN :

## DEVIDAYAL CABLE Industries Ltd.,

GUPTA MILLS ESTATE, REAY ROAD.

BOMBAY—10

Telephone : 372371, 372372
374709, 375720

Head-Office :
88, CHAKKLA STREET,
BOMBAY-3
Phone : 327440

Tele Gram : MAIL SPEED,
Phone : 1203

# Orient Mailspeed Transport Service,

7, GOPALBAG, JABALPUR

Contact For, Daily Transport Services : JABALPUR — BOMBAY
INDORE
NAGPUR
ALLAHABAD
SATNA
KATNI
GWALIOR

& ALL OVER INDIA.

आधुनिक रहन-सहन के लिये
आरामदायक एवं उच्चकोटि
क सोफा-कम-वेड तथा
वुडन फर्नीचर के
निर्माता :

# अशोक फर्नीचर मार्ट

गंजीपुरा मेन रोड, जबलपुर, म. प्र.

## "युक्रांद" सदस्यता शुल्क

संरक्षक सदस्य : स्वेच्छानुसार

आजीवन ,, : २००-०० रु०
दस वार्षिक ,, : १००-०० रु०
पाँच ,, ,, : ५०-०० रु०
एक ,, ,, : १२-०० रु०

## युक्रांद विज्ञापन शुल्क

प्रत्येक भीतर का पूरा पृष्ठ – ५० रु० प्रति अंक
,, ,, आधा ,, – २५ रु० प्रति अंक
कव्हर पृष्ठ इन्साइड ,, – ७५ रु० प्रति अंक
,, पृष्ठ वेक साइड ,, – १०० रु० प्रति अंक

**युक्रांद प्राप्ति स्थल**

१. जबलपुर : शुक्ला न्यूज पेपर एजेन्ट, जहाँगीराबाद, जबलपुर।
श्री गुलाबचन्द, मोटर स्टैण्ड बुक स्टाल, जबलपुर।
युक्रांद कार्यालय, कमला नेहरू नगर, जबलपुर। फोन : २६५७
२. सागर : श्री महेश कुमार, शक्ति बुक डिपो, हॉस्पिटल रोड, सागर
३. दमोह : श्री सूरज प्रसाद जी दुबे, बस स्टैण्ड, दमोह।
४. छिंदवाड़ा : श्री राजेन्द्र पटौरिया, गोलगंज, छिंदवाड़ा।
५. सिवनी : श्री वर्धमान न्यूज पेपर एजेण्ट, मोटर स्टैण्ड बुक स्टाल, सिवनी।
६. चौरई : श्री संतोष खंडेलवाल, खंडेलवाल न्यूज पेपर एजेन्ट, चौरई।

( देश के अन्यत्र सभी स्थानों के लिए आसान शर्तों पर विक्रय एजेण्ट नियुक्त करना है )

सम्पर्क कीजिए : अरविंद कुमार, मानसेवी सदस्य—
**युक्रांद प्रकाशन समिति,** कमला नेहरू नगर, जबलपुर।


आधुनिक डिजाइनों में मनपसंद
**टेरीकाट, टेरीन, सूती कटपीस के लिए**
पधारिए :
**पुष्प कटपीस भण्डार**
**जवाहरगंज, जबलपुर**

**जमीन, प्लाट, मकान के**
क्रय-विक्रय हेतु
सम्पर्क कीजिए :
**कुबेर**
( भूमि क्रय विक्रय निगम )
**जवाहरगंज, जबलपुर**

उत्तम तम्बाकू और कुशल कारीगरों से बनी

शेर और पहलवान छाप बिड़ी

भारत में अग्रणी है

निर्माता:-

# मोहनलाल हरगोविंददास

( जबलपुर म० प्र० )

# FOR BEST MOSAIC TILES

PLEASE CONTACT :

## VENUS TILES & MARBLE

*Manufacturing Co. (Pvt.) Ltd*

*Phone : 327618*
*327009*

**OFFICE :—**

31, ISRAIL MOHALLA,
BHAGWAN BHAVAN,
1st FLOOR, MASJID BUNDER ROAD,
BOMBAY—9 B. R.

**FACTORY AT :—**

SIDHPURA INDUSTRIAL ESTATE
MASRANI LANE,
KURLA, BOMBAY—70


मानसेवी संपादक श्री अजितकुमार एम० काम०, एल एल० बी० द्वारा सम्पादित एवं युक्तांद प्रकाशन समिति, कमला नेहरू नगर, जबलपुर के लिए मुद्रित एवं प्रकाशित। मुद्रण स्थल—जबलपुर को-आपरेटिव प्रिंटिंग प्रेस, जबलपुर.